शिक्षण सामग्री कक्षा सप्तमी - संस्कृतम्

नवमः पाठः अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि (पाठ का परिचय)

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से बाल मजदूरी के विरोध में जन जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। साथ-साथ इसे गैर कानूनी बताते हुए शिक्षा के अधिकार से विद्यार्थियों को अवगत कराया गया है।

अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि Summary

प्रस्तुत नाटक के माध्यम से बालशोषण का विरोध दर्शाकर उनके शिक्षा के मौलिक अधिकार का ज्ञान कराया गया है। एक अल्पवयस्का बालिका से गृहकार्य करवाना अनुचित है। अतः मालिनी दर्शना को कहती है कि यह समय तो उसकी अल्पवयस्का पुत्री के पढ़ने और खेलने का है तो दर्शना कहती है कि उसकी पुत्री एक परिवार का समस्त गृहकार्य करती थी। धनाभाव के कारण उन्हें यह सब करना पड़ता हैं क्योंकि उसका बीमार पति कुछ भी काम नहीं करता।

तो मालिनी दर्शना को समझाती है कि शिक्षा बच्चों का मौलिक अधिकार है। बच्चों की शिक्षा के लिए सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क परिधान, पुस्तकें, स्कूलबैग, जूते, दोपहर का भोजन और छात्रवृत्ति आदि दी जाती है। यह सुनकर दर्शना की पुत्री खुशी से ताली बजाकर नाचती है और कहती है कि मैं भी विद्यालय जाऊँगी और मालिनी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि

(क) मालिनि – (प्रतिवेशिनीं प्रति) गिरिजे! मम पुत्रः मातुलगृहं प्रति प्रस्थितः काचिद् अन्यां कामपि महिला कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।
गिरिजा – आम् सखि! अद्य प्रातः एव मम सहायिका स्वसुतायाः कृते कर्मार्थं पृच्छति स्म। श्वः प्रातः एव तया सह वार्तां करिष्यामि।
(अग्रिमदिने प्रातः काले षट्वादने एव मालिन्याः गृहघण्टिका आगन्तारं कमपि सूचयति मालिनी द्वारमुदघाटयति पश्यति यत् गिरिजायाः सेविकया दर्शनया सह एका अष्टवर्षदेशीय, बालिका तिष्ठति)

सरलार्थः
मालिनी – (पड़ोसिनी से) हे गिरिजा! मेरा पुत्र मामा के घर गया है, किसी दूसरी महिला (औरत) को काम के लिए जानती हो तो भेजो।।
गिरिजा – हाँ सखी! आज सुबह ही मेरी नौकरानी (सहायिका) अपनी बेटी के लिए काम हेतु पूछ रही थी। कल सुबह ही उसके साथ बात करूँगी। (अगले दिन सुबह छह बजे ही मालिनी के घर की घंटी किसी आने वाले की सूचना देती है, मालिनी दरवाजा खोलती है कि गिरिजा की नौकरानी दर्शना के साथ एक आठ वर्ष की, लड़की खड़ी है

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
प्रतिवोशिनीम्-पड़ोसिनी (neighbour)। मातुलगृहम्-मामा के घर (house of maternal uncle)। प्रति-की ओर (towards)। प्रस्थितः-चला गया है (went away)। काचिद्-कोई (any)। अन्याम्-दूसरी (another)। कार्यार्थम्-काम के लिए (for work)। तर्हि-तो (then)। प्रेषय-भेजो (send)। कमपि-किसी को भी (anyone)। सूचयति-सूचना देती है (informs)| द्वारम् उद्घाटयति-दरवाज़ा खोलती है (opens the door)। प्रातः-सुबह (morning)। सहायिका-नौकरानी (maid)। स्वसुतायाः कृते-अपनी बेटी के लिए (for one's daughter)। कर्मार्थम्-काम के लिए (for work)। पृच्छति स्म-पूछ रही थी (was asking)। श्वः-कल (आने वाला) (tomarrow)। तया सह-उसके साथ (with him/her)। अग्रिमदिने-अगले दिन (next day)। षट्वादने-छह बजे (at 6 o' clock)। गृहघण्टिका-घर की घंटी (bell of the house)। आगन्तारम्-आने वाले को (visitor)। अष्टवर्षदेशीया-आठ वर्ष वाली (eight years of age)।

सन्धिविच्छेदः
कमपि – काम् + अपि, कार्यार्थम् – कार्य + अर्थम्
कर्मार्थम् – कर्म + अर्थम्, द्वारमुद्घाटयति – द्वारम् + उद्घाटयति।

(ख) दर्शना – महोदये! भवती कार्यार्थं गिरिजामहोदयां पृच्छति स्म कृपया मम सुतायै अवसरं प्रदाय अनुगृह्णातु भवती।
मालिनी – परमेषा तु अल्पवयस्का प्रतीयते। किं कार्यं करिष्यत्येषा? अयं तु अस्याः अध्ययनस्य क्रीडनस्य च कालः।
दर्शना – एषा एकस्य गृहस्य संपूर्ण कार्यं करोति स्म। सः परिवारः अधुना विदेशं प्रति प्रस्थितः।
कार्याभावे अहमेतस्यै कार्यमेवान्वेषयामि स्म येन भवत्सदृशानां कार्य प्रचलेत् अस्मद्सदृशाना गृहसञ्चालनाय च धनस्य व्यवस्था भवेत्।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
भवती-आप (you)। कार्यार्थम्-काम के लिए (for work)। पृच्छति स्म-पूछ रही थीं (was asking)। कृपया-कृपा करके (kindly)। मम-मेरी (my)। सुतायै-बेटी के लिए (को) (for daughter)। अवसरम्-मौका (opportunity)। प्रदाय-देकर (by giving)| अनुगृह्णातु-कृपा करें (kindly)| अल्पवयस्का -कम उम्र वाली (minor)। प्रतीयते-दिख रही है (appears)। एषा-यह (this)। अध्ययनस्य-पढ़ाई का (of study)। काल:-समय (period)। एकस्य-एक (का) (one)। सम्पूर्णम्-सारा (whole)। करोति स्म-करती थी (used to do)। अधुना-इस समय (अब) (at this time)। प्रस्थित:-चला गया है (went away)। कार्याभावे-काम के न होने पर (on joblessness)। एतस्यै-इसके लिए (for this)। अन्वेषयामि स्म-ढूँढ रही थी (was searching)। येन-जिससे (so that)। भवत्सदृशानाम्-आप जैसों का (के) (people like you)। प्रचलेत्-चले (let us go)।

अस्मद्सदृशाना-हमारे जैसों का (के) (people like us)। गृहसञ्चालनाय-घर को चलाने के लिए (to run our family)। व्यवस्था-व्यवस्था (इन्तज़ाम) (arrangement)। भवेत्-हो जाए। (may be managed)।

सरलार्थः
दर्शना – महोदया (मैडम)! आप काम के लिए गिरिजा जी (देवी) से पूछ रही थीं कृपया मेरी बेटी को मौका देकर आप उपकार करें।

मालिनी – परंतु यह तो कम उम्र की दिखाई देती है। क्या काम करेगी यह? यह तो इसके पढ़ने और खेलने का समय है।
दर्शना – यह एक घर का सारा काम करती थी। वह परिवार इस समय विदेश चला गया है। काम की कमी के कारण मैं इसके लिए काम ढूँढ रही थी जिससे आप जैसों का काम चले और हमारे जैसों के घर को चलाने के लिए धन की व्यवस्था हो जाए।

सन्धिविच्छेदः-
करिष्यत्येषा – करिष्यति + एषा, कार्याभावे – कार्य + अभावे
अहमेतस्यै – अहम् + एतस्यै, कार्यमेवान्वेषयामि – कार्यम् + एव +
अन्वेषयामि, अस्मद्सदृशानाम् – अस्मत् + सदृशानाम्

(ग) मालिनी – परमेतत्तु सर्वथाऽनुचितम्। किं न जानासि यत् शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः।
दर्शना – महोदये! अस्मद् सदृशानां तु मौलिकाः अधिकाराः केवलं स्वोदरपूत्तिरेवास्ति। एतस्य व्यवस्थायै एव अहं सर्वस्मिन् दिने पञ्च-षड्गृहाणां कार्यं करोमि। मम रुग्णः पतिः तु किञ्चिदपि कार्यं न करोति। अतः अहं मम पुत्री च मिलित्वा परिवारस्य भरण-पोषणं कुर्वः। अस्मिन् महार्घताकाले मूलभूतावश्यकतानां कृते एव धनं पर्याप्तं न भवति तर्हि कथं विद्यालयशुल्कं, गणवेषं पुस्तकान्यादीनि क्रेतुं धनामानेष्यामि।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
परम्-परन्तु (but)। सर्वथा-पूरी तरह से (completely)। अनुचितम्-ठीक नहीं है (not proper)। मौलिकः-जन्मजात (मूलभूत) (natural)| अधि कार:-अधिकार (right)। अस्मद् सदृशानाम्-हमारे जैसों का (people like us)। स्वोदरपूर्तिः-अपना पेट भरना (to fill our stomac)। व्यवस्थायै-व्यवस्था के लिए (for arranging)। सर्वस्मिन्-सारा (whole)। दिने-दिन में (day)। पञ्च-षड्गृताणाम्-पाँच-छह घरों का (of five to six houses)। रुग्णः-बीमार (ill)। किञ्चित्-अपि-कुछ भी (nothing)। मिलित्वा-मिलकर के (मिल् + क्त्वा) (together with)। अस्मिन्-इस (this)। महार्घतावाले-मँहगाई के समय में (time of dearness)। मूलभूत-

आवश्यकतानाम् कृते-मूलभूत (ज़रूरी) ज़रूरतों के लिए (for basic needs)। पर्याप्तम्-काफ़ी (sufficient)। तर्हि-तो (then)। विद्यालयशुल्कम्-स्कूल की फ़ीस (school fees)। गणवेषम्-युनिफ़ार्म (uniform)। आदीनि-आदि को (etc)। क्रेतुम्-खरीदने के लिए (क्री+तुमुन्) (for purchasing)। आनेष्यामि-लाऊँगी, (shall bring)। कथम्-कैसे (how)।

सरलार्थः
मालिनी – परन्तु यह तो पूरी तरह से अनुचित (ठीक नहीं) है। क्या तुम नहीं जानती हो कि शिक्षा तो सभी लड़कों और सभी लड़कियों का मूलभूत (स्वाभाविक) अधिकार है।
दर्शना – देवी (मैडम)! हमारे जैसों का तो मूलभूत अधिकार केवल अपना पेट भरना ही है। इसकी व्यवस्था के लिए ही मैं सब दिन (पूरे दिन) में पाँच-छह घरों का काम करती हूँ। मेरे बीमार पति तो कुछ भी काम नहीं करते हैं। इसलिए मैं और मेरी बेटी मिलकर परिवार का भरण-पोषण (का काम) करते हैं। इस मँहगाई के समय में मूलभूत जरूरतों के लिए ही धन काफी नहीं होता है तो कैसे विद्यालय की फ़ीस, वेशभूषा (Uniform), पुस्तकें आदि को खरीदने के लिए धन लाएँगे

सन्धिविच्छेदः –
सर्वथाऽनुचितम् – सर्वथा + अनुचितम्
स्वोदरपूर्तिरेवास्ति – स्व + उदरपूर्तिः + एव + अस्ति
षड्गृहाणाम् – षट् + गृहाणाम्
किञ्चिदपि – किम् + चित् + अपि
मूलभूतावश्यकतानाम् – मूलभूत + आवश्यकतानाम्
पुस्तकान्यादीनि – पुस्तकानि + आदीनि
धनमानेष्यामि – धनम् + आनेष्यामि।

(घ) मालिनी – अहो! अज्ञानं भवत्याः। किं न जानासि यत् नवोत्तर-द्वि-सहस्र (2009) तमे वर्षे सर्वकारेण सर्वेषां बालकानां, सर्वासां बालानां कृते शिक्षायाः मौलिकाधिकारस्य घोषणा कृता। यदनुसारं षड्वर्षेभ्यः आरभ्य चतुर्दशवर्षपर्यन्तं सर्वे बालाः समीपस्थं सर्वकारीयं विद्यालयं प्राप्य न केवलं निःशुल्कं शिक्षामेव प्राप्स्यन्ति अपितु निःशुल्कं गणवेषं पुस्तकानि, पुस्तकस्यूतम्, पादत्राणाम्, माध्याह्नभोजनम्, छात्रवृत्तिम् इत्यादिकं सर्वमेव प्राप्स्यन्ति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
अहो-अरे (hei!)। अज्ञानम्-अज्ञानता (foolishness)। भवत्याः -आपकी (your)। सर्वकारेण-सरकार के द्वारा

(by government)। वर्षे-साल में (during years)। बालानां कृते-बच्चों के लिए (for children)। शिक्षायाः-शिक्षा के (for education)। मौलिकाधिकारस्य-मूल अधिकार की (of fundamental right)। यदनुसार-जिसके आधार पर (on which ground)। षड्वर्षेभ्यः-छह वर्षों से (from six years)। आरभ्य-शुरू होकर (beginning from)। चतुर्दशवर्षपर्चन्तम्-चौदह वर्षों तक के (till fourteen years)। समीपस्थम्-पास में स्थित (in the locality)। सर्वकारीयम्-सरकारी (government)। प्राप्य-पहुँचकर (जाकर) (on reaching)। निशुल्कम्-बिना फीस के (without fees)। प्राप्स्यन्ति-प्राप्त करेंगे (will get)। अपितु-बल्कि (but)। गणवेषम्-वर्दी (uniforms)। पुस्तकस्यूतम्-बस्ते को (for bags)। पादत्राणम्-जूते को (for shoes)। छात्रवृत्तिम्-वजीफे को (scholorship)। मध्याह्न भोजनम्-दोपहर के भोजन को (mid-day meal)। इत्यादिकम्-आदि को (etc)। प्राप्स्यन्ति-पाएँगे (will get)।

सन्धिविच्छेदः –
नवोत्तर – नव + उत्तर
मौलिकाधिकारस्य – मौलिक + अधिकारस्य
यदनुसारम् – यत् + अनुसारम्
षडवर्षेभ्यः – षट् + वर्षेभ्यः
इत्यादिकम् – इति + अदिकम्

सरलार्थः
मालिनी अरे यह आपकी मूर्खता (नासमझी) है। क्या नहीं जानती हो कि सन् 2001 ई० वर्ष में सरकार ने सब बच्चों, सभी बच्चियों के लिए शिक्षा के मौलिक (स्वाभाविक) अधिकार की घोषणा की है। जिसके अनुसार छह वर्षों से लेकर चौदह वर्ष तक के सारे बच्चे पास के (पास स्थित) सरकारी स्कूल में जाकर न सिर्फ निशुल्क (without fee) पढ़ाई ही करेंगे बल्कि बिना फीस वर्दी (Uniform), पुस्तकें, बस्ते (Bags), जूते, दोपहर का भोजन और वज़ीफा (Scholar ship) आदि सभी कुछ पाएँगे।

(ङ) दर्शना – अप्येवम् (आश्चर्येण मालिनी पश्यति)
मालिनी – आम्। वस्तुतः एवमेव।
दर्शना – (कृतार्थतां प्रकटयन्ती) अनुगृहीताऽस्मि महोदये! एतद् बोधनाय। अहम् अद्यैवास्याः प्रवेशं समीपस्थे विद्यालये कारयिष्यामि। दर्शनायाःपुत्री- (उल्लासेन सह) अहं विद्यालयं गमिष्यामि! अहमपि पठिष्यामि!
(इत्युक्त्वा
करतलवादनसहितं नृत्यति मालिनी प्रति च कृतज्ञतां ज्ञापयति)

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
अप्येवम्-ऐसा भी है (it is so)। आश्चर्येण-आश्चर्य से (with surprise)। वस्तुतः-वास्तव में (really)। एवमेव-यही है (it is this)। कृतार्थताम्-आभार को (of obligation)। प्रकटयन्ती-प्रकट करती हुई (showing)। अनुगृहीता-आभारी (obliged)। बोधनाय-बताने के लिए (for explanation)। प्रवेशम्-प्रवेश को (for admission)। अद्य एव-आज ही (today only)। अस्याः -इसका (its/(her)। समीपस्थे-पास में स्थित (in the locality)। कारयिष्यामि-कराऊँगी (shall get)। उल्लासेन-खुशी से (के) (with joy)। सह-साथ (together with)। पठिष्यामि-पढूंगी (shall read)। इति-इस प्रकार (therefore)। उक्त्वा -कहकर (by saying)। करतलवादनसहितम्-तालियाँ बजाने के साथ (with clapping hands)। कृतज्ञताम्-आभार को (for gratefulness)। ज्ञापयति-प्रकट करती है (expresses)।

सन्धिविच्छेदः
अप्येवम् – अपि + एवम्
अनुगृहीताऽस्मि – अनुगृहीता + अस्मि
अद्यैवास्याः – अद्य + एव + अस्याः
इत्युक्त्वा – इति + उक्त्वा
मालिनीप्रति – मालिनीम् + प्रति
अहं विद्यालयं गमिष्यामि – अहम् + विद्यालयम् + गमिष्यामि

सरलार्थः
दर्शना – ऐसा भी है (आश्चर्य से मालिनी को देखती है)
मालिनी – हाँ! वास्तव में यही है।
दर्शना – (कृतार्थता) (धन्यवाद) को प्रकट करती हुई) मैडम! मैं आभारी हूँ। यह बताने के लिए। मैं आज ही इसका प्रवेश पास (निकट) स्थित विद्यालय में कराऊँगी।
दर्शना की बेटी – (खुशी के साथ) मैं विद्यालय जाऊँगी। मैं भी पढंगी! (ऐसा कहकर ताली बजाकर नाचती है और मालिनी के लिए आभार व्यक्त करती है
प्रश्न: 1) उच्चारण कुरुत
अग्रिमदिने, षड्वादने, अष्टवर्षदेशीया, अनुगृह्णातु, भवत्सदृशानाम्, गृहसञ्चालनाय, व्यवस्थायै, महार्धताकाले, अद्यैवास्याः, करतलवादसहितम्!
उत्तर
स्वयं प्रयास करें।

प्रश्न 2.एकपदेन उत्तराणि लिखत

(क) गिरिज़ायाः गृहसेविकायाः नाम किमासीत्?

(ख) दर्शनायाः पुत्री कति वर्षीया आसीत्?

(ग) अद्यत्वे शिक्षा अस्माकं कीदृशः अधिकारः?

(घ) दर्शनायाः पुत्री कथं नृत्यति?

उत्तर

(क) दर्शना

(ख) अष्टवर्षीया

(ग) मौलिकः

(घ) करतलवादनसहितम्

प्रश्न 3. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) अष्टवर्षदेशीया दर्शनायाः पुत्री किं समर्थाऽसीत्?

(ख) दर्शना कति गृहाणां कार्यं करोति स्म?

(ग) मालिनी स्वप्रतिवेशिनीं प्रति किं कथयति?

(घ) अद्यत्वे छात्राः विद्यालये किं किं निःशुल्क प्राप्नुवन्ति?

उत्तर

(क) अष्टवर्षदेशीया दर्शनायाः पुत्री एकस्य सम्पूर्णकार्यं कर्तुं समर्थासीत् |

(ख) दर्शना पञ्च – षड् गृहाणां कार्यं करोति स्म।

(ग) मालिनी स्वप्रतिवेशिनीं प्रति स्वगृहकार्यार्थं कस्याश्चित् महिलासहायिकाया: विषये कथयति।

(घ) अद्यत्वे छात्रा विद्यालये निशुल्कं गणवेषम्,पुस्तकानि, पुस्तकस्यूतम्, पादत्राणाम्,मध्याह्नभोजनम्, छात्रवृत्तिं च प्राप्नुवन्ति।

प्रश्न 4. रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

(क) <u>मालिनी</u> द्वारमुद्घाटयति?

(ख) शिक्षा <u>सर्वेषां बालानां</u> मौलिकः अधिकारः।

(ग) दर्शना आश्चर्येण <u>मालिनीं</u> पश्यति।

(घ) दर्शना तस्याः पुत्री च मिलित्वा <u>परिवारस्य</u> भरणपोषणं कुरुतः स्म |

उत्तर

(क) का द्वारमुद्घाटयति?

(ख) शिक्षा केषां मौलिकः अधिकारः?

(ग) दर्शना आश्चर्येण कां पश्यति?

(घ) दर्शना तस्याः पुत्री च मिलित्वा कस्य भरणपोषणं – कुरुतः स्म?

प्रश्नः 5. सन्धि विच्छेदं पूरयत-(संधि विच्छेद पूरा कीजिए।

(क) ग्राम प्रति – ग्रामम् + ...

उत्तरम् - प्रति

(ख) कार्यार्थम् – ..... + अर्थम्

उत्तरम् - कार्य

(ग) करिष्यत्येषा – करिष्यति + ...

उत्तरम् - एषा

(घ) स्वोदरपूर्तिः – ..... + ...

उत्तरम् - स्व , उदरपूर्तिः

(ङ) अप्येवम् – अपि + ...

उत्तरम् - एवम्

प्रश्नः 6.(अ) समानार्थकपदानि मेलयत-(समानार्थक पदों को मिलाइए-Match with the synonyms words)

आश्चर्येण – पठनस्य

उल्लासेन – समयः

परिवारस्य – प्रसन्नतया

अध्ययनस्य – विस्मयेन

कालः – कुटुम्बस्य

उत्तराणि -

आश्चर्येण – विस्मयेन

उल्लासेन – प्रसन्नतया

परिवारस्य – कुटुम्बस्य

अध्ययनस्य – पठनस्य

कालः – समयः

आ) विलोमपदानि मेलयत- (विलोम पदों को मिलाइए-Match with the opposite words)

क्रेतुम् – दूरस्थम्
श्वः – कथयति
ग्रामम् – विक्रेतुम्
समीपस्थम् – ह्यः
पृच्छति – नगरम्
उत्तराणि -
क्रेतुम् – विक्रेतुम्
श्वः – ह्यः
ग्रामम् – नगरम्
समीपस्थम् – दूरस्थम्
पृच्छति – कथयति

प्रश्नः 7. विशेषणपदैः सह विशेष्यपदानि योजयत-(विशेषण पदों के साथ विशेष्य पदों के साथ मिलाइए-Join the adjectives with the nouns they quality)

सर्वेषाम् – बालिकानाम्
मौलिकः – विद्यालयम्
एषा – बालकानाम्
सर्वकारीयम् – अधिकारः
समीपस्थे – गणवेषम्
सर्वासाम् – अल्पवयस्का
निःशुल्कम् – विद्यालये
उत्तरम् -
सर्वेषाम् – बालकानाम्
मौलिकः – अधिकारः
एषा – अल्पवयस्का
सर्वकारीयम् – विद्यालयम्
समीपस्थे – विद्यालये
सर्वासाम् – बालिकानाम्
निःशुल्कम् – गणवेषम्

(1) गद्यांश पठित्वा अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-(गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the Questions the follow)

(क) मालिनी – (प्रतिवेशिनी प्रति) गिरिजे! मम पुत्रः मातुलगृह प्रति प्रस्थितः काचिद् अन्यां कामपि महिला कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।
गिरिजा – आम् सखि! अद्य प्रातः एव मम सहायिका स्वसुतायाः कृते कर्मार्थं पृच्छति स्म। श्वः प्रातः एव तया सह वार्ता करिष्यामि।

(अग्रिमदिने प्रातः काले षट्वादने एव मालिन्याः गृहघण्टिका आगन्तारं कमपि सूचयति मालिनी द्वारमुदघाटयति पश्यति यत् गिरिजायाः सेविकया दर्शनया सह एका अष्टवर्षदेशीय, बालिका तिष्ठति)

I. एकपदेन उत्तरत-(एक पद में उत्तर दीजिए-)
(i) प्रातः काले कति वादने एव मालिन्याः गृहघण्टिका आगन्तारं कमपि सूचयति?
उत्तरम् –षड्वादने
(ii) दर्शनया सह अष्टवर्षदेशीया का तिष्ठति?
उत्तरम् - बालिका
II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए-)
(i) गिरिजा कदा स्वसहायिकया सह वार्तां करिष्यति?
उत्तरम् (i) गिरिजा श्वः स्वसहायिकया सह वार्ता करिष्यति।
III. भाषिक कार्यम्-(भाषा-कार्य-)
(i) संवादे 'सायम्' पदस्य किं विलोम (विपरीत) पदं लिखितम् अस्ति?
(क) श्वः (ख) प्रातः (ग) एव (घ) सह
उत्तरम् - (ख) प्रातः
(ii) 'अन्यां महिलाम्' अत्र विशेषणपदं किम्?
(क) अन्या (ख) महिला (ग) महिला (घ) अन्यां
उत्तरम् - (घ) अन्यां
(iii) 'बालिका तिष्ठति' अनयोः क्रियापदं किम् अस्ति?
(क) तिष्ठति (ख) बालिका (ग) बालिकाम् (घ) तिष्ठ
उत्तरम्- (क) तिष्ठति

(iv) 'करिष्यामः' पदस्य एकवचनं किं भवति?

(क) करिष्यामि (ख) करिष्यति (ग) करिष्यावः (घ) करिष्यसि

उत्तरम् - (क) करिष्यामि

(ख) मालिनी- परमेतत्तु सर्वथाऽनुचितम्। किं न जानासि यत् शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः।

दर्शना – महोदये! अस्मद् सदृशानां तु मौलिकाः अधिकाराः केवलं स्वोदरपूर्त्ति-रेवास्ति। एतस्य व्यवस्थायै एव अहं सर्वस्मिन् दिने पञ्च-षड्गृहाणां कार्यं करोमि। मम रुग्णः पतिः तु किञ्चिदपि कार्यं न करोति। अतः अहं मम पुत्री च मिलित्वा परिवारस्य भरण-पोषणं कुर्वः। अस्मिन् महार्घताकाले मूलभूतावश्यकतानां कृते एव धनं पर्याप्तं न भवति तर्हि कथं विद्यालयशुल्कं, गणवेषं पुस्तकान्यादीनि क्रेतुं धनामानेष्यामि।

I. एकपदेन उत्तरत-(एक पद में उत्तर दीजिए-)

(i) कः सर्वेषां बालकानां कृते मौलिकः अधिकारः?

उत्तरम् - शिक्षा

(ii) दर्शनायाः कः रुग्णः अस्ति?

उत्तरम् - पतिः

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-(पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए-)

(i) शिक्षा केषां मौलिकः अधिकारः अस्ति?

उत्तरम् - शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः अस्ति।

(ii) केषां कृते एव धनं पर्याप्तं न भवति?

उत्तरम् - अस्मिन् महार्घताकाले मूलभूतावश्यकतानां कृते एव धनं पर्याप्तं न भवति।

III. भाषिक कार्यम्-(भाषा-कार्य-)

(i) 'मिलित्वा' पदे क: धातुः क: प्रत्ययः च स्त:?

(क) मिल + क्त्वा (ख) मिल् + क्त्वा (ग) मिलि + त्वा (घ) मिलि + क्त्वा

उत्तरम् - (ख) मिल् + क्त्वा

(ii) संवादे 'मौलिकाः' इति विशेषण पदस्य कः विशेष्यः?

(क) अधिकाराः (ख) अधिकारः (ग) अधिकारम् (घ) सदृशानाम्

उत्तरम् - (ख) अधिकारः

(2) पर्यायपदानि मेलयत-(पर्यायवाची शब्द मिलाइए-Match with the synonymous word)

पदानि – पर्यायाः

(क) दत्त्वा – अवसरम्

(ख) पठनस्य – प्रस्थितः

(ग) सूचनां ददाति – सर्वस्मिन्

(घ) नारीम् – प्रदाय

(ङ) समयम् – अनुचितम्

(च) गतः – गणवेशम्

(छ) सम्पूर्णे – पादत्राणम्

(ज) वेशभूषाम् – सूचयति

(झ) उपानहम् – महिलाम्

(ञ) न उचितम् – अध्ययनस्य

उत्तराणि -

(क) प्रदाय (ख) अध्ययनस्य (ग) सूचयति (घ) महिलाम् (ङ) अवसरम् (च) प्रस्थितः (छ) सर्वस्मिन्

(ज) गणवेषम् (झ) पादत्राणम् (ञ) अनुचितम्

(3) परस्परमेलनं कुरुत-(परस्पर मेल कीजिए-Match the following)

(क) अन्यां कामपि महिलां – क्रीडनस्य च कालः।

(ख) अहम् अद्यैवास्याः प्रवेशं – सह वार्तां करिष्यामि।

(ग) कृपया मम सुतायै – विदेशं प्रति प्रस्थितः।

(घ) शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां – समीपस्थे विद्यालये कारयिष्यामि।

(ङ) अयं तु अस्याः अध्ययनस्य – कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।

(च) श्वः प्रातः एव तया – सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः।

(छ) सः परिवारः अधुना – अवसरं प्रदाय अनुगृह्णातु भवती।

उत्तराणि-

(क) अन्यां कामपि महिलां – कार्यार्थं जानासि तर्हि प्रेषय।

(ख) अहम् अद्यैवास्याः प्रवेशं – समीपस्थे विद्यालये कारयिष्यामि।

(ग) कृपया मम सुतायै – अवसरं प्रदाय अनुगृह्णातु भवती।

(घ) शिक्षा तु सर्वेषां बालकानां – सर्वासां बालिकानां च मौलिकः अधिकारः

(ङ) अयं तु अस्याः अध्ययनस्य – क्रीडनस्य च कालः।

(च) श्वः प्रातः एव तया – सह वार्तां करिष्यामि।

(छ) सः परिवारः अधुना – विदेशं प्रति प्रस्थितः।

बहुविकल्पीय प्रश्नाः -

(i) मातुलगृहं कः प्रस्थितः?

(A) गिरिजा (B) मालिनी (C) गिरिजायाः पुत्रः (D) मालन्याः पुत्रः।

उत्तरम् - (D) मालिन्याः पुत्रः।

(ii) गिरिजायाः सेविकया सह का आगच्छति?

(A) तस्याः पुत्री (B) मालिनी (C) तस्याः पुत्रः (D) गिरिजा।

उत्तरम् - (A) तस्याः पुत्री

(iii) का एकस्य गृहस्य कार्यं करोति स्म?

(A) सेविकायाः पुत्री (B) मालिनी (C) तस्याः पुत्रः (D) गिरिजा

उत्तरम् - (A) सेविकायाः पुत्री

(iv) कस्य कृते धनस्य आवश्यकता अस्ति?

(A) पुत्री- कृते (B) मालिनी कृते (C) गृहसञ्चालनाय (D) गिरिजा -कृते।

उत्तरम् - (C) गृहसञ्चालनाय

(v) कस्याः अधिकारः सर्वेषां मौलिकः अधिकारः अस्ति ?

(A) कार्यम् (B) शिक्षायाः अधिकारः (C) वार्तालापं (D) भ्रमणं

उत्तरम् - (B) शिक्षायाः अधिकारः

(vi) कस्य पति रुग्णः आसीत्?

(A) गिरिजायाः (B) मालिन्याः (C) सेविकायाः (D) प्रतिवेशन्याः

उत्तरम् - (C) सेविकायाः

(vii) सेविका कति गृहाणाम् कार्यं करोति स्म?

(A) त्रीणि (B) चत्वारि (C) अष्ट (D) पञ्च-षड्।

उत्तरम् - (D) पञ्च-षड्।

(viii) बालकाः कानि वस्तूनि निशुल्कं प्राप्स्यन्ति?

(A) गणवेषं (B) पुस्तकानि (C) माध्याह्नभोजनं (D) सर्वाणि।

उत्तरम् - (D) सर्वाणि।

दशमः पाठः (विश्वबन्धुत्वम्)

विश्वबंधुत्वम् पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ के द्वारा संसार में बन्धुत्व अर्थात् भाईचारे की भावना की आवश्यकता और महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। सभी विकसित, विकासशील और अविकसित देशों में परस्पर प्रेम और मित्रता का व्यवहार होना चाहिए। पाठ में वर्णन किया गया है कि सूर्य, चन्द्र और प्रकृति भेदभाव नहीं करते हैं, तब मानव को भी वैरभाव छोड़कर बन्धुत्व के भाव से संसार में व्यवहार करना चाहिए। संसार के कल्याण के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में मानने वाले उदार एवं महान् व्यक्ति होते हैं।

पाठस्य सार:

उत्सवे, व्यसने, दुर्भिक्षे, राष्ट्रविप्लवे, दैनन्दिनव्यवहारे च यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति। यदि विश्वे सर्वत्र एतादृशः भावः भवेत् तदा विश्वबन्धुत्वम् सम्भवति।

उत्सव में, व्यक्तिगत संकट में, अकाल पड़ने पर, देश पर आपदा आने पर और दैनिक व्यवहार में जो सहायता करता है, वह मित्र होता है। यदि संसार में सब जगह ऐसा भाव आ जाए तो विश्वबन्धुता सम्भव है।

परन्तु अधुना निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति। मानवाः परस्परं न विश्वसन्ति। ते परस्य कष्टं स्वकीयं कष्टं न गणयन्ति। अपि च समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति, तेषाम् उपरि स्वकीयं प्रभुत्वं स्थापयन्ति। संसारे सर्वत्र विद्वेषस्य, शत्रुतायाः, हिंसायाः च भावना दृश्यते। देशानां विकासः अपि अवरुद्धः भवति।

परन्तु आजकल संसार में कलह और अशान्ति का वातावरण है। मनुष्य आपस में विश्वास नहीं करते हैं। वे दूसरे के कष्ट को अपना कष्ट नहीं समझते हैं। समर्थ देश असमर्थ देशों के प्रति अनादर की भावना प्रदर्शित करते हैं और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं। संसार में सब जगह शत्रुता, वैर और हिंसा की भावना दिखाई पड़ती है। देशों का विकास भी बाधित होता है।

इयम् महती आवश्यकता वर्तते यत् एकः देशः अपरेण देशेन सह निर्मलेन हृदयेन बन्धुतायाः व्यवहारं कुर्यात्। विश्वस्य जनेषु इयं भावना आवश्यकी। ततः विकसिताविकसितयोः देशयोः मध्ये स्वस्था स्पर्धा भविष्यति। सर्वे देशाः ज्ञानविज्ञानयोः क्षेत्रे मैत्रीभावनया सहयोगेन च समृद्धिम् प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति। सूर्यस्य चन्द्रस्य च प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति। प्रकृतिः अपि सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति। तस्मात् अस्माभिः सर्वैः परस्परं वैरभावम् अपहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्। अतः विश्वस्य कल्याणाय एतादृशी भावना भवेत्-

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

यह महती आवश्यकता है कि एक देश दूसरे देश के साथ शुद्ध हृदय से बन्धुता का व्यवहार करे । संसार के मनुष्यों में यह भावना आवश्यक है। इसके द्वारा विकसित - अविकसित देशों के बीच में स्वस्थ स्पर्धा होगी।

सभी देश ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में मैत्री भावना और सहयोग के द्वारा समृद्धि को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। प्रकृति भी सभी के साथ समान व्यवहार करती है। इसलिए हम सबको आपसी शत्रुता के भाव को छोड़कर संसार में भाईचारा स्थापित करना चाहिए। इसलिए विश्व के कल्याण के लिए ऐसी भावना होनी चाहिए-

यह अपना है अथवा पराया है ऐसी सोच संकीर्ण मन वालों की होती है। उदार मन वालों के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी ही परिवार होती है।

कठिनशब्दा:

क्रम संख्या	शब्दा:	अर्था:
1	राष्ट्रविप्लवे	राष्ट्रसंकटे
2	निर्मलेन	विमलेन
3	विश्वबन्धुत्वम्	विश्वमित्रत्वम्
4	प्रभुत्वं	स्वामित्वम्
5	समत्वेन	समानरुपेण
6	विकासः	उन्नति:
7	अवरुद्ध:	बाधित:
8	बन्धुतायाः	मित्रताया:

पठित बोध:-1

परन्तु अधुना निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति। मानवाः परस्परं न विश्वसन्ति। ते परस्य कष्टं स्वकीयं कष्टं न गणयन्ति। अपि च समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति, तेषाम् उपरि स्वकीयं प्रभुत्वं स्थापयन्ति। संसारे सर्वत्र विद्वेषस्य, शत्रुतायाः हिंसाया: च भावना दृश्यते। देशानां विकासः अपि अवरुद्ध: भवति।

I एकपदेन उत्तरत---

(क) केषाम् विकासः अवरुद्ध: भवति ?

(ख) के **परस्परं न विश्वसन्ति** ?

II पूर्णवाक्येन उत्तरत---

(क) **समर्थाः देशाः किं कुर्वन्ति** ?

(ख) **कुत्र कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति?**

III निर्देशानुसारेण उत्तरत---

(क) **"मानवाः परस्परं न विश्वसन्ति"** अस्मिन् वाक्ये कर्तृ/कर्ता पदं किम्?

(अ) **मानवाः** (ब) न (स) **परस्परं** (द) **विश्वसन्ति**

(ख) **"निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति "** अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(अ) **वातावरणम्** (ब) **अस्ति** (स) **संसारे** (द) **कलहस्य**

(ग) **परकीयम् "** अनुच्छेदे अस्य पदस्य किं **विलोमपदं** प्रयुक्तमस्ति ?

(अ) स्वकीयम् (ब) सुखम् (स) **उपेक्षाभावं** (द) **प्रभुत्वं**

(घ) **"विश्वे"** इत्यस्य **पर्याय** पदं किं प्रयुक्तम् ?

(अ) **अशान्तेः** (ब) **दृश्यते** (स) संसारे (द) **सर्वत्र**

उत्तराणि -

एक पदेन उत्तरत---

(क) देशानां (ख) मानवाः

II पूर्णवाक्येन उत्तरत---

(क) समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति, तेषाम् उपरि स्वकीयं प्रभुत्वं स्थापयन्ति।

(ख) निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति।

III निर्देशानुसारेण उत्तरत---

(क) मानवाः

(ख) अस्ति

(ग) स्वकीयम्

(घ) संसारे

पठित बोधः-2

इयं महती आवश्यकता वर्तते यत् एकः देशः अपरेण देशेन सह निर्मलेन हृदयेन बन्धुतायाः व्यवहारं कुर्यात् । विश्वस्य जनेषु इयं भावना आवश्यकी । ततः विकसितविकसितयोः देशयोः मध्ये स्वस्था स्पर्धा भविष्यति । सर्वे देशाः ज्ञानविज्ञानयोः क्षेत्रे मैत्रीभावनया सहयोगेन च समृद्धिं प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति । सूर्यस्य चन्द्रस्य च प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति। प्रकृतिः अपि सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति। तस्मात् अस्माभिः सर्वैः परस्परं वैरभावम् अपहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्।

एक पदेन उत्तरत---

(क) देशाः **मैत्रीभावनया कां प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति ?**

(ख) **कस्य जनेषु इयं भावना अत्यावश्यकी ?**

II पूर्णवाक्येन उत्तरत---

(क) सर्वे देशाः कथं समृद्धिं प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति?
(ख) अस्माभिः सर्वैः किम् विहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्?

III निर्देशानुसारेण उत्तरत---

(क) **"सूर्यस्य प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।"** अस्मिन् वाक्ये कर्तृ/कर्ता पदं किम्?
(आ) **प्रकाशः** (ब) सर्वत्र (स) **प्रसरति** (द) **समानरूपेण**

(ख) **"विकसिताविकसितयोः देशयोः मध्ये स्वस्था स्पर्धा भविष्यति"** अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?
(आ) **भविष्यति** (ब) **देशयोः** (स) **मध्ये**(द) **स्पर्धा**

(घ) **" समर्थाः "** अनुच्छेदे अस्य पदस्य **विलोमपदं** प्रयुक्तमस्ति।
(अ) **देशः** (ब) **असमर्थाः** (स) **उपेक्षाः** (द) **प्रकृतिः**

(घ) **"विमलेन"** इत्यस्य **पर्याय** पदं प्रयुक्तम्।
(अ) **क्षेत्रेन** (ब) **दृश्यतेन** (स) निर्मलेन (द) **सर्वत्रेन**

उत्तरं

एक पदेन उत्तरत---
(क) समृद्धिं (ख) विश्वस्य
II पूर्णवाक्येन उत्तरत---
क) सर्वे देशाः ज्ञानविज्ञानयोः क्षेत्रे मैत्रीभावनया सहयोगेन च समृद्धिं प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति ।
(ख) अस्माभिः सर्वैः वैरभावम् अपहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्।
III निर्देशानुसारेण उत्तरत---
(क) प्रकाशः (ख) भविष्यति ग) असमर्थाः (घ) निर्मलेन

- सन्धि-विच्छेदं कुरुत) सन्धि-विच्छेद कीजिए (

पदम्-सन्धि	विच्छेदः।
केनापि	केन + अपि
तदैव + तदा	एव
वसुधैव	वसुधा + एव ।

- क्रियापदै :रिक्तस्थानपूर्ति :कुरुत -

मञ्जूषा

भविष्यति , कुर्यात् , अस्ति , करोति , व्यवहरति

1. एकः देशः अपरेण देशेन सह निर्मलेन हृदयेन बन्धुतायाः व्यवहारं ---------- ।
2. यः सहायतां ---------- सः बन्धुः भवति ।
3. प्रकृतिः अपि सर्वेषु समत्वेन ---------- ।
4. ततः विकसिताविकसितयोः देशयोः मध्ये स्वस्था स्पर्धा ----------।
5. निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् ----------।

उत्तरं

1. कुर्यात्
2. करोति
3. व्यवहरति
4. भविष्यति
5. अस्ति

- कर्तृपदै :रिक्तस्थानपूर्ति :कुरुत -

मञ्जूषा

देशाः , बन्धुः , प्रकाशः , मानवाः , प्रकृतिः

1. ---------- परस्परं न विश्वसन्ति।
2. सर्वे ---------- ज्ञानविज्ञानयोः क्षेत्रे मैत्रीभावनया सहयोगेन च समृद्धिं प्राप्तुं समर्थाः भविष्यन्ति।
3. ---------- अपि सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति।
4. सूर्यस्य चन्द्रस्य च ---------- सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।
5. यः सहायतां करोति सः ---------- भवति।

उत्तरं

1. मानवाः
2. देशाः
3. प्रकृतिः
4. प्रकाशः
5. बन्धुः

- रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

1. अधुना निखिले संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति।
2. अस्माभिः परस्परं वैरभावम् अपहाय विश्वबन्धुत्वं स्थापनीयम्।
3. सूर्यस्य चन्द्रस्य च प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।

4. मानवाः परस्परं न विश्वसन्ति।
5. देशानां विकासः अपि अवरुद्ध :भवति।

उत्तरं

1. कस्य ?
2. किम् ?
3. कथं / किमर्थम् ?
4. के ?
5. केषाम् ?

* समानार्थकपदानि (बहुविकल्पात्मका:: प्रश्ना:)

(1) निखिले = ... (समानार्थकपदम्)

(क) दुःखम् (ख) स्वकीयम् (ग) सम्पूर्णे (घ) कष्टम्

उत्तरम् - सम्पूर्णे

(2) बाधितः = ... (समानार्थकपदम्)

(क) सम्पन्नम् (ख) अवरुद्धः (ग) आत्मानम् (घ) अपहाय

उत्तरम् -- (ख) अवरुद्धः

(3) परिवारः = ... (समानार्थकपदम्)

(क) सम्पूर्णे (ख) निखिले (ग) त्यक्त्वा (घ) कुटुम्बकम्

उत्तरम् - (घ) कुटुम्बकम्

(4) समृद्धम् = ... (समानार्थकपदम्)

(क) अपहाय (ख) परस्य (ग) त्यक्त्वा (घ) सम्पन्नम्

उत्तरम् -- (घ) सम्पन्नम्

(5) अन्यस्य = ... (समानार्थकपदम्)

(क) कष्टम् (ख) परस्य (ग) बाधितः (घ) निखिले

उत्तरम् - (ख) परस्य

- विलोमपदानि बहुविकल्पात्मक :प्रश्ना:

(1) दानवाः x ..... (विलोमपदम्)

(क) मानवाः (ख)मित्रता: (ग) अधुना: (घ) उदारा:

उत्तरं - (क) मानवाः

(2) सुखिनः x ..... (विलोमपदम्)

(क) मित्रन: (ख) दानवाः (ग) दुःखिनः (घ) अधुना

उत्तरं - (ग) दुःखिनः

(3) अधुना x ..... (विलोमपदम्)

(क) पुरा (ख) गृहीत्वा (ग) दुःखम् (घ) त्यक्त्वा

उत्तरं - (क) पुरा

(4) शत्रुतायाः x ..... (विलोमपदम्)

(क) बाधितः (ख) सम्पूर्णे (ग) सुखम् (घ) मित्रतायाः

उत्तरं - (घ) मित्रतायाः

(5) गृहीत्वा x ..... (विलोमपदम्)

(क) अपहाय (ख) पुरा (ग) मित्रतायाः (घ) मानवाः

उत्तरं - (क) अपहाय

- उपपदविभक्तिप्रयोग: (बहुविकल्पात्मक :प्रश्नाः)

(1)..... परितः भक्ताः सन्ति । (मन्दिर)

(क)मन्दिरे (ख) मन्दिरम् (ग) मन्दिरस्य (घ) मन्दिरेण

उत्तरं - (ख) मन्दिरम्

(2) ..... उभयतः गोपालकाः । (कृष्ण)

(क) कृष्णस्य (ख) कृष्णम् (ग) कृष्णः (घ) कृष्णेन

उत्तरं - (ख) कृष्णम्

(3) ..... उपरि खगाः । (वृक्ष)

(क) वृक्षः (ख) वृक्षे (ग) वृक्षम् (घ) वृक्षस्य

उत्तरं - (घ) वृक्षस्य

(4) ..... नमः । (सूर्य)

(क) सूर्यस्य (ख) सूर्यम् (ग) सूर्ये (घ) सूर्याय

उत्तरं - (घ) सूर्याय

.

एकादशः पाठः

समवायो हि दुर्जयः

पाठस्य परिचय: - समवायो हि दुर्जय: = पाठ में हम लोग एकता की शक्ति के बारे में पढ़ेंगे कि एकता अजेय होती है |एकता को कभी भी आसानी से हराया नहीं जा सकता है इसलिए एकता दुर्जेय है |

पाठस्य सार: - पुरा एकस्मिन् वृक्षे एका चटका प्रतिवसति स्म। कालेन तस्याः सन्ततिः जाता। एकदा कश्चित् प्रमत्तः गजःतस्य वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत्। चटकायाः नीडं भुवि अपतत्। तेन अण्डानि विशीर्णानि।अथ सा चटका व्यलपत्। तस्याः विलापं श्रुत्वा काष्ठकूटः नाम खगः दुःखेन ताम् अपृच्छत्-"भद्रे, किमर्थं विलपसि ?" इति।

सरलार्थः- पुराने समय में एक वृक्ष पर एक चिड़िया रहती थी। समय पर उसकी सन्तान हुई। एक बार किसी मतवाले हाथी ने उस वृक्ष के नीचे आकर उसकी शाखा को सूंड से तोड़ दिया। चिड़िया का घोंसला भूमि पर गिर गया। उससे अंडे टूट गए। अब वह चिड़िया रोने लगी। उसका विलाप सुनकर काष्ठकूट नाम के पक्षी ने दुःखपूर्वक उससे पूछा-"भली चिड़िया, क्यों रो रही हो ?"

2. चटकावदत्-"दुष्टेनैकेन गजेन मम सन्ततिः नाशिता। तस्य गजस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरेत्।" ततः काष्ठकूटः तां वीणारवा-नाम्न्याः मक्षिकायाः समीपम् अनयत् । तयोः वार्ता श्रुत्वा मक्षिकावदत्-"ममापि मित्रं मण्डूकः मेघनादः अस्ति। शीघं तमुपेत्य यथोचितं करिष्यामः।" तदानीं तौ मक्षिकया सह गत्वा मेघनादस्य पुरः सर्वं वृत्तान्तं न्यवेदयताम्।

सरलार्थः-चिड़िया बोली-"एक दुष्ट हाथी ने मेरी सन्तान नष्ट कर दी। उस हाथी के वध से ही मेरा दुःख दूर होगा।" उसके बाद काष्ठकूट उस (चिड़िया) को वीणारवा नाम वाली मक्खी के पास ले गया। उन दोनों की बातचीत सुनकर मक्खी ने कहा-"मेरा भी मेघनाद नाम वाला एक मेंढक मित्र है। जल्दी ही उसके पास जाकर जो उचित होगा वही करेंगे।" तब उन दोनों ने मक्खी के पास जाकर मेघनाद के सामने सारा समाचार कह दिया।

3. मेघनादः अवदत्-"यथाहं कथयामि तथा कुरुतम्। मक्षिके ! प्रथमं त्वं मध्याह्ने तस्य गजस्य कर्णे शब्दं कुरु, येन सः नयने निमील्य स्थास्यति। तदा काष्ठकूटः चञ्चवा तस्य नयने स्फोटयिष्यति। एवं सः गजः अन्धः भविष्यति। तृषार्तः सः जलाशयं गमिष्यति। मार्गे महान् गर्त्तः अस्ति। तस्य अन्तिके अहं स्थास्यामि शब्दं च करिष्यामि। मम शब्देन तं गर्तं जलाशयं मत्वा स तस्मिन्नेव गर्ते पतिष्यति |

मरिष्यति च।" अथ तथाकृते सः गजः मध्याह्ने मण्डूकस्य शब्दम् अनुसृत्य महतः गर्तस्य अन्तः पतितः मृतः च। तथा चोक्तम् 'बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः।

सरलार्थः-मेघनाद ने कहा-"जैसा मैं कहता हूँ वैसा तुम दोनों करो। हे मक्खी, पहले तुम दोपहर के समय उस हाथी के कान में शब्द करना (भिनभिनाना) जिससे वह दोनों आँखें बंद करके रुक जाएगा। तब काष्ठकूट चोंच से उसकी दोनों आँखें फोड़ देगा। इस प्रकार वह अन्धा हो जाएगा। प्यास से पीड़ित वह (हाथी) तालाब पर जाएगा। रास्ते में बड़ा गड्ढा है। उस (गड्ढे) के पास मैं रुक जाऊँगा और शब्द (टर्र टर्र) करूँगा।

मेरी आवाज से उस गड्ढे को तालाब समझकर वह (हाथी) उस गड्ढे में गिर जाएगा और मर जाएगा।" इसके बाद वैसा करने पर वह हाथी दोपहर में मेंढक की आवाज़ का अनुसरण करके बड़े गड्ढे के अन्दर गिर गया और मर गया। और कहा भी गया है 'अनेक निर्बलों का संगठन कठिनता से जीतने योग्य होता है।' अर्थात् संगठन में ही शक्ति होती है।

शब्दार्थाः-

पुरा =	**पहले, पुराने समय में।**
प्रतिवसति स्म =	**रहती थी।**
कालेन =	**समय पर।**
सन्ततिः =	**सन्तान।**
प्रमत्तः =	**मतवाला, मदमस्त।**
अधः =	**नीचे।**
आगत्य =	**आकर।**
शुण्डेन =	**सूंड से।**
अत्रोटयत् =	**तोड़ दिया।**
नीडम् =	**घोंसला।**
भुवि =	**धरती पर/भूमि पर।**
अपतत् =	**गिर गया।**
विशीर्णानि =	**नष्ट हो गए।**

व्यलपत् (वि + अलपत्) = विलाप करने लगी/रोने लगी।
विलपसि = रो रही हो/विलाप कर रही हो।
वधेनैव (वधेन + एव) = वध से ही।
अपसरेत् = दूर होगा।
वीणारवा नाम्न्याःमक्षिकायाः = वीणारवा नाम की मक्खी के।
तमुपेत्य (तम् + उपेत्य) = उसके पास जाकर ।
यथोचितम् = जो, उचित हो।
तदानीम् = तब।
न्यवेदयताम् = (उन दोनों ने) निवेदन किया।
मध्याह्ने = दोपहर में।
निमील्य = बन्द करके।
स्थास्यति = रुक जाएगा।
स्फोटयिष्यति = फोड़ देगा।
तृषार्तः (तृषा + आर्तः) = प्यास से पीड़ित।

प्रश्न 1. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) वृक्षे का प्रतिवसति स्म ?

उत्तर = चटका

(ख) वृक्षस्य अधः कः आगतः ?

उत्तर = गजः

(ग) गजः केन शाखाम् अत्रोटयत् ?

उत्तर = शुण्डेन

(घ) काष्ठकूटः चटकां कस्याः समीपम् अनयत् ?

उत्तर = मक्षिकायाः

(ङ) मक्षिकायाः मित्रं कः आसीत् ?

उत्तर = मण्डूकः

प्रश्न 2. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) कालेन चटकायाः सन्ततिः जाता।

उत्तर = कालेन कस्याः सन्ततिः जाता ?

(ख) चटकायाः नीडं भुवि अपतत्।

उत्तर = चटकायाः किं भुवि अपतत् ?

(ग) गजस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरेत्।

उत्तर = कस्य वधेनैव मम दुःखम् अपसरेत् ?

(घ) काष्ठकूटः चञ्चुवा गजस्य नयने स्फोटयिष्यति।

उत्तर = काष्ठकूट: केन गजस्य नयने स्फोटयिष्यति ?

प्रश्न 3. मञ्जूषातः क्रियापदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

करिष्यामि,	गमिष्यति,	अनयत्,	पतिष्यति,	स्फोटयिष्यति,	त्रोटयति।

(क) काष्ठकूटः चञ्चुवा गजस्य नयने .....

(ख) मार्गे स्थितः अहमपि शब्दं .....

(ग) तृषार्तः गजः जलाशयं.....

(घ) गजः गर्ते .....

(ङ) काष्ठकूटः तां मक्षिकायाः समीपम् .....

(च) गजः शुण्डेन वृक्षशाखां .....

उत्तर

(क) काष्ठकूट: चञ्चुवा गजस्य नयने स्फोटयिष्यति ।

(ख) मार्गे स्थितः अहमपि शब्दं करिष्यामि ।

(ग) तृषार्तः गजः जलाशयं गमिष्यति ।

(घ) गजः गर्ते पतिष्यति ।

(ङ) काष्ठकूटः तां मक्षिकायाः समीपम् अनयत् ।

(च) गजः शुण्डेन वृक्षशाखां त्रोटयति ।

प्रश्न 4. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकवाक्येन लिखत -

(क) चटकायाः विलापं श्रुत्वा काष्ठकूटः तां किम् अपृच्छत् ?

उत्तर = स: अपृच्छत्-"भद्रे किमर्थं विलपसि ?

(ख) चटकायाः काष्ठकूटस्य च वार्ता श्रुत्वा मक्षिका किम् अवदत् ?

उत्तर = मक्षिका अवदत्-"ममापि मित्रं मण्डूकः मेघनादः अस्ति, शीघ्रं तम् उपेत्य यथोचितं करिष्यामः।"

(ग) मेघनादः मक्षिकां किम् अवदत् ?

उत्तर = मेघनादः अवदत्-"यथाहं कथयामि तथा कुरुतम्।"

(घ) चटका काष्ठकूटं किम् अवदत् ?

उत्तर = चटका अवदत्-"एकेन दुष्टेन गजेन मम सन्ततिः नाशिताः।

प्रश्न 5. उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-.

(क) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- प्रथमपुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
प्रथमपुरुषः	.....	पतिष्यतः	.....
प्रथमपुरुषः	.....	.....	मरिष्यन्ति

(ख) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- मध्यमपुरुषः	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
मध्यमपुरुषः	.....	धाविष्यथः	.....
मध्यमपुरुषः	.....	.....	क्रीडिष्यथ

ग) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- उत्तमपुरुषः	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
उत्तमपुरुष	.....	हसिष्यावः	.....
उत्तमपुरुषः	.....	.....	द्रक्ष्यामः

उत्तर-5.

(क) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
प्रथमपुरुषः	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
प्रथमपुरुषः	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति

(ख) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
मध्यमपुरुषः	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
मध्यमपुरुषः	धाविष्यसि	धाविष्यथः	धाविष्यथ
मध्यमपुरुषः	क्रीडिष्यसि	क्रीडिष्यथः	क्रीडिष्यथ

(ग) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
उत्तमपुरुषः	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
उत्तमपुरुषः	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः
उत्तमपुरुषः	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

प्रश्न 6. उदाहरणानुसारं 'स्म' शब्दं योजयित्वा भूतकालिकक्रियां रचयत-

यथा अवसत् – वसति स्म।

अपठत् – .....।

अत्रोटयत् – .....।

अपतत् – .....।

अपृच्छत् – ……।

अवदत् – ……।

अनयत् – ……।

उत्तरम् -

अपठत् – पठति स्म।

अत्रोटयत् – त्रोटयति स्म।

अपतत् – पतति स्म।

अपृच्छत् – पृच्छति स्म।

अवदत् – वदति स्म।

अनयत् – नयति स्म।

प्रश्न 7. कोष्ठकात् उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

(क) …… बालिका मधुरं गायति। (एकम्, एका, एकः)

(ख) …… कृषकाः कृषिकर्माणि कुर्वन्ति। (चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि)

(ग) …… पत्राणि सुन्दराणि सन्ति। (ते, ताः, तानि)

(घ) धेनवः दुग्धं …… । (ददाति, ददति, ददन्ति)

(ङ) वयं संस्कृतम् …… (अपठत्, अपठन्, अपठाम)

उत्तर

(क) एका बालिका मधुरं गायति।

(ख) चत्वारः कृषकाः कृषिकर्माणि कुर्वन्ति ।

(ग) तानि पत्राणि सुन्दराणि सन्ति।

(घ) धेनवः दुग्धं ददति।

(ङ) वयं संस्कृतम् अपठाम।

(बहुविकल्पीया : प्रश्नाः)

(1) वृक्षे का प्रतिवसति स्म ?

(A) चटका (B) महिला (C) बालिका (D) कोकिला।

उत्तरम् - (A) चटका

(2) वृक्षस्य अधः कः आगतः ?

(A) भल्लूकः (B) गर्दभः (C) गजः (D) सिंहः।

उत्तरम् - (C) गजः

(3) गजः केन शाखाम् अत्रोटयत् ?

(A) पादेन (B) शुण्डेन (C) कर्णेन (D) दन्तेन।

उत्तरम् - (B) शुण्डेन

(4) काष्ठकूटः चटकां कस्याः समीपम् अनयत् ?

(A) न्यायाधीशस्य (B) काष्ठकूटस्य (C) काकस्य (D) मक्षिकायाः।

उत्तरम् - (D) मक्षिकायाः।

(5) मक्षिकायाः मित्रं कः आसीत् ?

(A) मण्डूकः (B) काकः (C) काष्ठकूटः (D) गर्दभः

उत्तरम् - (A) मण्डूकः

(6) चटकायाः नीडं कुत्र अपतत् ?

(A) भुवि (B) आकाशे (C) प्रासादे (D) राजभवने।

उत्तरम् - (A) भुवि

(7) काष्ठकूट: केन गजस्य नयने स्फोटयिष्यति ?

(A) पादेन (B) पक्षण (C) चञ्चवा (D) पत्रेण।

उत्तरम् - (C) चञ्चवा

(8) कालेन कस्याः सन्ततिः जाता ?

(A) काष्ठकूटस्य (B) चटकायाः (C) काकस्य (D) मण्डूकस्य।

उत्तरम् - (B) चटकायाः

9. कस्याः अण्डानि विशीर्णानि?

(A) लतायाः (B) चटकायाः (C) मक्षिकाया: (D) काष्ठकूटस्य

उत्तरम् - (B) चटकायाः

10. मक्षिकायाः नाम किम् आसीत्?

(A) मेघनादः (B) मधुरिमा (C) वीणारवा (D) सरस्वती

उत्तरम् - (C) वीणारवा

11. कः गजस्य नयने स्फोटयिष्यति?

(A) काकः (B) मण्डूकः (C) सिंहः (D) काष्ठकूटः

उत्तरम्- (D) काष्ठकूटः

12. गजः कस्य अन्तः पतितः मृतः च?

(A) गर्तस्य (B) समुद्रस्य (C) नद्याः (D) वनस्य

उत्तरम् - (A) गर्तस्य

13. 'स्थास्यामि' पदे कः लकारः?

(A) लट् (B) लृट् (C) लङ् (D) लोट्

उत्तरम् - (B) लृट्

14. 'अन्तः' पदस्य विपरीतार्थकपदम् किं भवति?

(A) अधः (B) नीचैः (C) बहिः (D) पुरा

उत्तरम् - (C) बहिः

द्वादशः पाठः
विद्याधनम्

विद्याधनम् (पाठ का परिचय)

प्रस्तुत पाठ में श्लोकों के द्वारा विद्या के महत्त्व को बताया गया है। विद्या मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ धन है। विद्यावान् व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है, विद्या मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। विद्या कल्पतरु के समान मनुष्य के सभी कार्य पूर्ण करती है। विद्याहीन मनुष्य पशु के समान होता है। अतः मनुष्य को श्रेष्ठ प्राणी बनने के लिए विद्या रूपी धन को संचित करना चाहिए।

विद्याधनम्

विद्या कल्पलता की तरह होती है। इस पाठ में विद्या का महत्त्व बताया गया है। यथा विद्या को चोर चुरा नहीं सकता, राजा छीन नहीं सकता और भाई बाँट नहीं सकता। विद्या सभी धनों में श्रेष्ठ है। इसे व्यय किए जाने पर यह बढ़ती है। विद्या मनुष्य का सौन्दर्य है। यह गुप्त से गुप्त धन है। यह अनेक भोगों को देने वाली है तथा सुख प्रदान करने वाली है। राजाओं में ज्ञान की पूजा होती है तथा धन की नहीं।मनुष्य की शोभा न तो हार से बढ़ती है और न ही पुष्प अथवा अङ्गराग के द्वारा बढ़ती है। मनुष्य की शोभा ज्ञान से बढ़ती है। विद्या माता की तरह रक्षा करती है, पिता की तरह हित का साधन करती है। यह शोभा को बढ़ाती है। विद्या मनुष्य का सभी प्रकार से भला करती है।

प्रथमः श्लोकः

न चौरहार्यं न च राजहार्यम् ।
न भ्रातभाज्यं न च भारकारि।।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं।
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

शब्दार्थाः

(1) चौरहार्यम् = चोरों के द्वारा चुराने योग्य।

(2) राजहार्यम् = राजा के द्वारा छीनने योग्य।

(3) भ्रातृभाज्यम् = भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य।

(4) भारकारि = भार (बोझ) बढ़ाने वाली।

(5) वर्धते = बढ़ता है।

(6) नित्यं = हमेशा।

(7) प्रधानम् = प्रमुख। (सर्वोत्तम)

सरलार्थः -

न चोरों के द्वारा चुराने योग्य है और न राजा के द्वारा छीनने योग्य है, न भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य है और न भार (बोझ) बढ़ाने वाला है। हमेशा खर्च करने पर बढ़ता ही है। विद्या रुपी धन सभी धनों में प्रमुख (सर्वोत्तम) है।

द्वितीयः श्लोकः

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीनः पशुः॥

शब्दार्थाः

(1) प्रच्छन्नगुप्तम् =अत्यन्त गुप्त।

(2) भोगकरी = भोग का साधन उपलब्ध कराने वाली।

(3) परा = सबसे बड़ी।

(4) गुरूणां = गुरुओं का।

(5) राजसु = राजाओं में।

(6) विद्या-विहीनः = विद्या से रहित।

सरलार्थः

विद्या मनुष्य का अधिक (अच्छा) स्वरूप है, छुपा हुआ गोपनीय धन है, विद्या भोग का साधन उपलब्ध कराने वाली है, कीर्ति और सुख प्रदान कराने वाली है, विद्या गुरुओं का गुरु है। विद्या विदेश जाने पर बन्धु (मित्र) के समान होती है, विद्या सबसे बड़ा देवता है। विद्या राजाओं में पूजी जाती है, धन नहीं। विद्या से रहित (मनुष्य) पशु के समान होता है।

तृतीयः श्लोकः

केयूराः न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला।
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजाः।।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।
क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥

शब्दार्थाः

(1) केयूराः = बाजूबन्द।

(2) चन्द्रोज्ज्वला (चन्द्र+उज्ज्वला) = चन्द्रमा के समान चमकदार।

(3) विलेपनम् = शरीर पर लेप करने योग्य सुगन्धित-द्रव्य। (चन्दन, केसर आदि)

(4) मूर्धजाः = वेणी/चोटी।

(5) नालङ्कृता (न + अलङ्कृता) = नहीं सजाया हुआ।

(6) वाण्येका (वाणी+एका) = एकमात्र वाणी।

(7) समलङ्करोति (सम्+अलङ्करोति) = अच्छी तरह सुशोभित करती है।

(8) संस्कृता = परिष्कृत। (संस्कारयुक्त)

(9) धार्यते = धारण की जाती है।

(10) क्षीयन्तेऽखिलभूषणानि (क्षीयन्ते अखिलभूषणानि) = सम्पूर्ण आभूषण नष्ट हो जाते हैं।

(11) वाग्भूषणम् = वाणी का आभूषण।

सरलार्थः

मनुष्य को न बाजूबन्द सुशोभित करते हैं, न चन्द्रमा के समान चमकदार हार, न स्नान, न शरीर पर सुगन्धित लेपन (चन्दन, केसर आदि), न फूल सुशोभित करते हैं और ना ही सजाई गई चोटी ही। मनुष्य को एकमात्र वाणी, भली प्रकार सुशोभित करती है, जो परिष्कृत (संस्कारयुक्त) रूप में धारण की जाती है (व्यवहार में लाई जाती है)। अन्य सभी आभूषण नष्ट हो जाते हैं, (परन्तु) वाणी का आभूषण सदैव रहने वाला आभूषण है।

चतुर्थः श्लोकः

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयः।
धेनुः कामदुघा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा।।
सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्।
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु॥

शब्दार्थाः

(1) कीर्तिरतुला (कीर्तिः + अतुला) = अतुल्य यश।

(2) कामदुघा = इच्छाओं की पूर्ति करने वाली (one that fulfils all aspiration/desires).

(3) रतिश्च (रतिः + च) = और प्रेम।

(4) सत्कारायतनम (सत्कार + आयतनम) = सम्मान का स्थान अर्थात् सम्मान प्रदान करने वाली।

(5) रत्नैर्विना (रत्नैः+विना) (मूल्यवान.) = रत्नों के बिना।

(6) विद्याधिकारम् -(विद्या + अधिकारम्) = विद्या पर प्रभुत्व।

सरलार्थः

विद्या वास्तव में (नाम) मनुष्य की अतुल्य कीर्ति है, भाग्यक्षय (बदकिस्मती) होने पर एक आश्रय/सहारा है। कामनापूर्ति करने वाली गाय अर्थात् कामधेनु है। विरह में प्रेम करती है और वही मनुष्य की तीसरी आँख होती है। सम्मान का स्थान है। कुल की महिमा है, (बहुमूल्य) रत्नों के बिना भी आभूषण है। अतः अन्य सब बातों को छोड़ विद्या पर अपना प्रभुत्व कर लो।

विकल्पात्मक प्रश्नाः -

(1) सर्वधनप्रधानम् किं ?

(क) धनं (ख) राज्ञ (ग) विद्या (घ) भ्राता

उत्तरम् = (ग) विद्या।

(2) किं व्यये कृते वर्धते?

(क) विद्याधनं (ख) धनं (ग) तस्याः धनं (घ) भ्रातुः धनं

उत्तरम् = (क) विद्याधनं।

(3) गुरूणाम् गुरुः का ?

(क) धनं (ख) राज्ञ (ग) विद्या (घ) भ्राता

उत्तरम् = (ग) विद्या।

(4) कः पशुसमानः ?

(क) राजसुपूज्यते (ख) बंधुजनाः (ग) भ्राता (घ) विद्याहीनः

उत्तरम् = (घ) विद्याहीनः।

(5) वाण्येका कं समलंकरोति ?

(क) विद्याहीनम् (ख) पुरुषं (ग) भूपतिं (घ) बंधुजनम्

उत्तरम् = (ख) पुरुषं।

(6) अस्माभिः किं करणीयम् ?

(क) विद्याधिकारं करणीयम् (ख) महिमा करणीयम् (ग) विद्याधिकारं न करणीयम् (घ) महिमा न करणीयम्

उत्तरम् = (क) विद्याधिकारं करणीयम्।

(7) किं धनं सर्वधनप्रधानम् ?

(क) विद्याधनम् (ख) दानधनम् (ग) रत्नधनम् (घ) रूपधनम्

उत्तरम् = (क) विद्याधनम्।

(8) राजसु का पूज्यते ?

(क) धनम् (ख) विद्या (ग) शक्तिः (घ) सुन्दरता

उत्तरम् = (ख) विद्या।

(9) किं भूषणं सततं भूषणम् ?

(क) वाग्भूषणम् (ख) शौर्यभूषणम् (ग) धनभूषणम् (घ) स्वर्णाभूषणम्

उत्तरम् = (क) वाग्भूषणम्।

(10) का दिक्षु कीर्तिम् वितनोति ?

(क) माता (ख) अध्यापिका (ग) विद्या (घ) देवी

उत्तरम् = (ग) विद्या।

(11) 'राजसु'पदे का विभक्तिः ?

(क) प्रथमा (ख) सप्तमी (ग) षष्ठी (घ) तृतीया

उत्तरम् = (ख) सप्तमी।

(12) 'गुरूणाम्' पदे किम् वचनम् ?

(क) एकवचनम् (ख) द्विवचनम् (ग) बहुवचनम् (घ) सर्वम्

उत्तरम् = (ग) बहुवचनम्।

अधोलिखित प्रश्नानान् एकपदेन उत्तरत।

(1) संस्कृता का धार्यते ?

उत्तरम् = वाणी।

(2) कानि क्षीयन्ते ?

उत्तरम् = आभूषणानि।

(3) सत्कारायतन कस्य महिमा ?

उत्तरम् = कुलस्य।

(4) विद्या केषां गुरुः ?

उत्तरम् = गुरुणाम् ।

(5) विद्या कीदृशं धनम् अस्ति ?

उत्तरम् = प्रच्छन्नगुप्तम्।

(6) का राजसु पूज्यते ?

उत्तरम् = विद्या।

(7) कः पशुः ?

उत्तरम् = विद्याविहीनः।

(8) का भोगकारी ?

उत्तरम् = विद्या।

(9) व्यये कृते किं वर्धते ?

उत्तरम् = विद्याधनम्।

(10) कामदुघा धेनुः का ?

उत्तरम् = विद्या।

रेखाङ्कित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं क्रियताम् -

(1) *विद्या* राजसु पूज्यते।

(क) कुत्र (ख) केषु (ग) कान् (घ) का

उत्तरम् = (घ) का।

(2) *विद्या* भाग्यक्षये आश्रयः।

(क) किम् (ख) कः (ग) का (घ) कैः

उत्तरम् = (ग) का।

(3) विद्याधनम् *सर्वप्रधानम्* धनम् अस्ति।

(क) कीदृशम् (ख) कुत्र (ग) कैः (घ) कृतः

उत्तरम् = (क) कीदृशम्।

(4) विद्या नाम *नरस्य* रुपमधिकम्।

(क) कस्य (ख) केन (ग) कया (घ) कुत्र

उत्तरम् = (क) कस्य।

(5) विद्या *गुरुणां* गुरुः।

(क) केन (ख) कस्य (ग) कया (घ) केषाम्

उत्तरम् = (घ) केषाम्।

(6) विद्या *राजसु* पूज्यते।

(क) केन (ख) केषु (ग) किम् (घ) का

उत्तरम् = (ख) केषु।

(7) विद्या विदेशगमने *बन्धुजनः*।

(क) कः (ख) का (ग) कुत्र (घ) केन

उत्तरम् = (क) कः।

(8) विद्याविहीनः *नरः* पशुः अस्ति।

(क) कः (ख) का (ग) कया (घ) किम्

उत्तरम् = (क) कः।

(9) विद्या *दिक्षु* कीर्तिं तनोति।

(क) किम् (ख) केन (ग) कुत्र (घ) का

उत्तरम् = (ग) कुत्र।

(10) *पिता* हिते नियुङ्क्ते।

(क) कः (ख) का (ग) केन (घ) कुत्र

उत्तरम् = (क) कः।

रिक्तस्थानानि पूरयत -

कृते , विद्या , बंधुजनो , पुरुषं , प्रच्छन्न गुप्तं

(क) व्यये ..... नित्यं वर्धते एव।

(ख) विद्या नाम नरस्य रुपम् अधिकं ..... धनम् अस्ति।

(ग) केयूराः ..... न विभूषयन्ति।

(घ) विद्या विदेशगमने .....।

(ङ) राजसु ..... पूज्यते।

उत्तरम्

(क) कृते। (ख) प्रच्छन्नगुप्तं। (ग) पुरुषं। (घ) बंधुजनो। (ङ) विद्या।

उपयुक्तकथनानाम् समक्षम् "आम्" अनुपयुक्त कथनानाम् समक्षम् "न" इति लिखत।

(1) विद्याधनं चौरहार्यम्।

(2) विद्या व्ययकृते न वर्धते।

(3) वाणी पुरुषं अलङ्कृतं करोति।

(4) मनुष्यस्य कीर्तितुला विद्या।

(5) विद्या विदेशगमने रिपुः।

(6) सर्वं विहाय विद्याधिकारं कुरु।

(7) विद्याधनं सर्वधनेषु प्रधानम्।

उत्तरम्

(1) न। (2) न। (3) आम्। (4) आम्। (5) न। (6) आम्। (7) आम्।

अधोलिखितान् श्लोकांशान् परस्परं योजयत-

	(खण्ड-क)		**(खण्ड-ग)**
(क)	न चौरहार्यं	(1)	विद्या गुरूणां गुरुः

(ख)	वाण्येका	(2)	विभूषयन्ति पुरुषम्
(ग)	केयूराः न	(3)	समलङ्करोति पुरुषम्
(घ)	विद्याधनं	(4)	न च राजहार्यम्
(ङ)	विद्या भोगकरी यशः सुखकरी	(5)	सर्वधनप्रधानम्

उत्तरम्

(क) 4 (ख) 3 (ग) 2 (घ) 5 (ङ) 1

अधोलिखितेषु सन्धिं कुरुत -

यथा = रमा + ईशः = रमेशः।

(क) पिता + इव (ख) माता + इव (ग) कान्ता + इव (घ) राका + ईशः (ङ) लता + इव

उत्तरम्

(क) पितेव। (ख) मातेव। (ग) कान्तेव। (घ) राकेशः। (ङ) लतेव।

पठित पंद्याश:
श्लोकं पठित्वा प्रश्नानान् उत्तरत -

न चौरहार्यं न च राजहार्यम्।
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं।
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

(क) एकपदेन उत्तरत।

(1) का चौरहार्यं नास्ति ?

(2) भारकारि किं नास्ति ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(1) व्ययकृते किं वर्धते ?

(2) सर्वधनप्रधानं किम् अस्ति ?

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत -

(1) 'सञ्चये' इत्यस्य विलोमपदं किम् ?

(क) व्यये (ख) कृते (ग) च (घ) प्रधानम्

(2) "न चौरहार्यं" इत्यस्मिन् पदे अव्ययम् अस्ति।

(क) न (ख) चौरं (ग) हार्यं (घ) कोऽपि नास्ति।

(3) "व्यये कृते वर्धते" इत्यत्र क्रियापदं लिखत -

(क) कृते (ख) व्यये (ग) वर्धते (घ) शून्यम्

(4)' वर्धते' इत्यस्य बहुवचनान्तरुपं लिखत -

(क) वर्धन्ते (ख) वर्धावहे (ग) वर्धन्ति (घ) वर्धामहे

उत्तरम्

एकपदेन उत्तरत।

(1) विद्या। (2) विद्याधनम्।

पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(1) व्ययकृते विद्याधनं वर्धते। (2) सर्वधनप्रधानं विद्याधनं अस्ति।

यथानिर्देशम् उत्तरत-

(1) (क) व्यये। (2) (क) न। (3) (ग) वर्धते। (4) (क) वर्धन्ते।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्या-विहीनः पशुः॥

(क) एकपदेन उत्तरत।

(1) प्रच्छन्नगुप्तं धनं किम् अस्ति ?

(2) गुरुणां गुरुः का अस्ति ?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत

(1) विद्या कुत्र बंधुजनः?

(2) कः नरः पशुः?

(ग) यथानिर्देशम् उत्तरत -

(1) 'राजसु' इति पदे का विभक्ति ?

(क) द्वितीया (ख) पंचमी (ग) तृतीया (घ) सप्तमी

(2) 'गुरुणां' इत्यस्मिन् पदे वचनम् अस्ति ?

(क)एकवचनम् (ख) बहुवचनम् (ग) द्विवचनम् (घ) कोऽपि नास्ति

(3) "देवता" इत्यस्य विलोमपदं किम् ?

(क) मानवः (ख) दानवः (ग) पुरुषः (घ) महापुरुषः

(4) "विद्या" अस्य पदस्य लिङ्ग लिखत।

(क) स्त्रीलिङ्गम् (ख) नपुसंकलिङ्गम् (ग) पुल्लिङ्गम् (घ) कोऽपि नास्ति

उत्तरम्

एकपदेन उत्तरत।

(1) विद्याधनम्। (2) विद्या।

पूर्णवाक्येन उत्तरत।

(1) विद्या विदेशगमने बंधुजनः। (2) विद्या विहीनः नरः पशुः।

यथानिर्देश उत्तरत।

(1) सप्तमी विभक्ति। (2) बहुवचनम्। (3) दानवः। (4) स्त्रीलिङ्गम्।

त्रयोदशः पाठः
अमृतं संस्कृतम्

पाठ का परिचय :-

प्रस्तुत पाठ में संस्कृत-भाषा के महत्त्व का वर्णन है। यह भाषा संसार की भाषाओं में प्राचीनतम और अधिकतर भाषाओं की जननी है। यह परिमार्जित और वैज्ञानिक भाषा है। इसका साहित्य संस्कृति का ज्ञान प्रदान करता है। अतः संस्कृति, आचरण और श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करने के लिए संस्कृत अवश्य पढ़नी चाहिए।पाठ से 'इकारान्त स्त्रीलिंग' शब्दों का ज्ञान प्राप्त होगा।

पाठ का सारांश:-

संसार की सभी भाषाओं में संस्कृत प्राचीनतम भाषा है। यह प्रायः सभी भारतीय प्रादेशिक भाषाओं की मूल स्वीकार की गई है। इसमें ज्ञान और विज्ञान का खजाना सुरक्षित है। संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है। इसका साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। इसमें वेदों, शास्त्रों, पुराणों तथा अन्य आधुनिक शास्त्रों की रचना हुई है। संस्कृत भाषा के कालिदास जैसे कवि विश्व में प्रसिद्ध हैं। संस्कृत भाषा में अनेक शास्त्रों की रचना हुई। अनेक आचार्यों ने उल्लेखनीय कार्य किया है। आचार्य भास्कर, महर्षि चरक और महर्षि सुश्रुत का नाम आज भी आदर के साथ लिया जाता है। संस्कृत की विशेषता सर्वतोमुखी है। इसका नीतिशास्त्र विश्व प्रसिद्ध है। नीतिशास्त्र में नीतिविषयक वचनों का संग्रह प्राप्त है। ये वचन मनुष्य को जीवनोपयोगी व समाजोपयोगी व्यवहार सिखाते हैं। संस्कृत के कारण ही भारत विश्व का गुरु कहलाता है। इसके सर्वातिशायी गुणों के कारण ही यह भाषा अजर-अमर है।

(क) विश्वस्य उपलब्धासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषास्ति। भाषेयं अनेकाषां भाषाणां जननी मता। प्राचीनयोः ज्ञानविज्ञानयोः निधिः अस्यां सुरक्षितः। संस्कृतस्य महत्त्वविषये केनापि कथितम्- 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा'। इयं भाषां अतीव वैज्ञानिकी। केचन कथयन्ति यत् संस्कृतमेव सङ्गणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा। अस्याः वाङ्मयं वेदैः, पुराणैः, नीतिशास्त्रैः चिकित्साशास्त्रादिभिश्च समृद्धमस्ति। कालिदासादीनां विश्वकवीनां काव्यसौन्दर्यम् अनुपमम्।कौटिल्यरचितम् अर्थशास्त्रं जगति प्रसिद्धमस्ति। गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभट: अकरोत्। चिकित्साशास्त्रे चरकसुश्रुतयो: योगदानं विश्वप्रसिद्धम्। संस्कृते यानि अन्यानि शास्त्राणि विद्यन्ते तेषु वास्तुशास्त्रं, रसायनशास्त्रं, खगोलविज्ञानं, ज्योतिषशास्त्रं, विमानशास्त्रं इत्यादीनि उल्लेखनीयानि।

शब्दार्थाः

उपलब्धासु-उपलब्ध भाषाओं में, प्राचीनतमा-सबसे पुरानी, भाषेयम् (भाषा+इयम्)-यह भाषा,

जननी-माता, मता-मानी गई है, निधिः-खजाना, प्रतिष्ठे-दो प्रतिष्ठाएँ/सम्मानप्रद तत्त्व, केचन-कुछ लोग, सर्वोत्तमा-सर्वश्रेष्ठ, वाङ्मयं-साहित्य, अनुपमम्-अतुलनीय, जगति-संसार में, अर्थशास्त्रम्-अर्थशास्त्र, गणितशास्त्रे-गणित शास्त्र में, शून्यस्य-शून्य का, सर्वप्रथमं – सबसे पहले, योगदानम्- योगदान, विश्वप्रसिद्धम्- संसार में विख्यात, खगोलशास्त्रं-अन्तरिक्ष शास्त्र, वास्तुशास्त्रं-वास्तुशास्त्र, रसायनशास्त्रं-रसायनशास्त्र, ज्योतिषशास्त्रं-ज्योतिषशास्त्र , विमानशास्त्रं-विमानशास्त्र, उल्लेखनीयम्-लिखने (बताने) योग्य.

सरलार्थ :
संसार की सभी उपलब्ध भाषाओं में संस्कृत भाषा सबसे अधिक प्राचीन है। यह भाषा अनेक भाषाओं की माता मानी गई है। प्राचीन ज्ञान विज्ञान का खज़ाना इसमें सुरक्षित है। संस्कृत के महत्त्व के विषय में किसी के द्वारा कहा गया है- भारत की दो प्रतिष्ठाएँ हैं- संस्कृत और (देश की) संस्कृति। यह भाषा बहुत वैज्ञानिकी है। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत ही कम्प्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ (सर्वोत्तम) भाषा है। इसका साहित्य वेदों से, पुराणों से, नीतिशास्त्रों से और चिकित्साशास्त्र आदि को से सम्पन्न (परिपूर्ण) है। कालिदास आदि विश्वकवियों का काव्य-सौन्दर्य अतुलनीय है। चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र संसार में प्रसिद्ध है। गणितशास्त्र में शून्य का प्रयोग सबसे पहले आर्यभट्ट ने किया था। चिकित्साशास्त्र में चरक और सुश्रुत का योगदान विश्वविख्यात है। संस्कृत में जो दूसरे शास्त्र हैं, उनमें वास्तुशास्त्र, रसायनशास्त्र, अन्तरिक्ष विज्ञान, ज्योतिषशास्त्र और विमानशास्त्र इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

एकपदेन उत्तरत :-

प्र.1. का भाषा प्राचीनतमा?

उत्तरम् – संस्कृतभाषा |

प्र.2. चाणक्येन रचितं शास्त्रं किम्?

उत्तरम्:अर्थशास्त्रम् |

पूर्णवाक्येन उत्तरत :-

प्र.1. आर्यभट्टः कस्मिन् शास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनम् अकरोत्?

उत्तरम् – गणितशास्त्रे

प्र.2. चरकसुश्रुतयोः योगदानं कस्मिन् क्षेत्रे अस्ति?

उत्तरम्:चरकसुश्रुतयोः योगदानं चिकित्साशास्त्रे अस्ति

भाषिक कार्यम्-

प्र.1. गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभट: अकरोत् | इत्यत्र क्रियापदं लिखत |

(अ) गणितशास्त्रे (ब) प्रतिपादनं (स) अकरोत् (द) शून्यस्य

उत्तरम् – अकरोत्

प्र.2. माता शब्दस्य पर्यायपदं गद्यांशे चित्वा लिखत -

(अ) जननी (ब) संस्कृत (स) निधिः (द) शास्त्रं

उत्तरम् – जननी

प्र.3. संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषास्ति। इत्यत्र कर्तृपदं गद्यांशे चित्वा लिखत –

(अ) प्राचीनतमा (ब) भाषास्ति (स) संस्कृतभाषा (द) शास्त्रं

उत्तरम् – संस्कृतभाषा

प्र.4. नूतना शब्दस्य विलोमपदं गद्यांशे चित्वा लिखत -

(अ) निधिः (ब) संस्कृत (स) प्राचीनतमा (द) अतीव

उत्तरम् – प्राचीनतमा

(ख) संस्कृते विद्यमानाः सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति। यथा-सत्यमेव जयते, वसुधैव कुटुम्बकम्, विद्ययाऽमृतमश्नुते, योगः कर्मसु कौशलम् इत्यादयः। सर्वभूतेषु आत्मवत् व्यवहारं कर्तुं संस्कृतभाषा सम्यक् शिक्षयति। केचन कथयन्ति यत् संस्कृतभाषायां केवलं धार्मिकं साहित्यम् वर्तते-एषा धारणा समीचीना नास्ति। संस्कृतग्रन्थेषु मानवजीवनाय विविधाः विषयाः समाविष्टाः सन्ति।
महापुरुषाणां मतिः, उत्तमजनानां धृतिः सामान्यजनानां जीवनपद्धतिः च वर्णिताः सन्ति।
अतः अस्माभिः संस्कृतम् अवश्यमेव पठनीयम्। तेन मनुष्यस्य समाजस्य च परिष्कारः भवेत्।
उक्तञ्च —
अमृतं संस्कृतं मित्र!
सरसं सरलं वचः।

भाषासु महनीयं यद्
ज्ञानविज्ञानपोषकम्॥

शब्दार्थाः

विद्यमानाः-विद्यमान, अभ्युदयाय-भौतिक उन्नति के लिए, सत्यमेव (सत्यम् + एव)-सत्य ही, वसुधैव (वसुधा + एव)-पृथ्वी ही, विद्ययाऽमृतम् (विद्यया + अमृतम्)-विद्या द्वारा अमरत्व, अश्नुते-प्राप्त करता है, कर्मसु- कर्मों में, सर्वभूतेषु-सब प्राणियों के प्रति, सम्यक् भली-भाँति, केचन-कुछ, धारणा-सोच, समीचीना-उचिता, समाविष्टाः-समावेश (समाये हुए), मतिः-बुद्धि, धृतिः - धैर्य, जीवनपद्धतिः-जीवन की प्रणाली,परिष्कारः-शुद्धि, वचः-वाणी, महनीयम्-आदरणीय, पूज्य, पोषकम्-पोषण करने वाला.

सरलार्थ :
संस्कृत (साहित्य) में विद्यमान सूक्तियाँ भौतिक उन्नति के लिए प्रेरित करती हैं। जैसे- 'सत्य की ही सदा विजय होती है' 'सारी पृथ्वी ही एक छोटा सा परिवार है', 'विद्या द्वारा अमरत्व की प्राप्ति होती है (अर्थात् विद्या द्वारा मनुष्य अमर हो जाता है)' 'कर्मों में कौशल/निपुणता ही योग है' इत्यादि। सब के प्रति अपने जैसा व्यवहार करने के लिए संस्कृत भाषा अच्छी तरह से शिक्षा देती है। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कृत भाषा में केवल धार्मिक साहित्य है-यह सोच (धारणा) उचित नहीं है। संस्कृत ग्रन्थों में मानव जीवन के लिए विभिन्न विषयों का समावेश (समाए हुए) है। महापुरुषों की बुद्धि, सज्जनों का धैर्य और सामान्य मनुष्यों की जीवन प्रणाली (पद्धति) वर्णित की गई है। इसलिए हमारे द्वारा संस्कृत अवश्य ही पढ़ने योग्य है अर्थात् हमें संस्कृत अवश्य पढ़नी चाहिए। जिससे मानव की और समाज की शुद्धि हो। और कहा गया है मित्र संस्कृत अमृत है। सरस और सरल वाणी है। भाषाओं में जो सम्मान के योग्य है और ज्ञान एवं विज्ञान की पोषक (पोषण करने वाली) है।

एकपदेन उत्तरत-

प्र.1. संस्कृत भाषा किं शिक्षयति ?
उत्तरम्- व्यवहारं |
प्र.2. संस्कृतभाषा कीदृशं व्यवहारं शिक्षयति ?
उत्तरम् - आत्मवत् |
पूर्णवाक्येन उत्तरत :-
प्र.1 . संस्कृतभाषा केषु आत्मवत् व्यवहारं शिक्षयति ?
उत्तरम्- संस्कृतभाषा सर्वभूतेषु आत्मवत् व्यवहारं शिक्षयति |
प्र.2 . केचन किं कथयन्ति ?
उत्तरम् – केचन कथयन्ति यत् संस्कृतभाषायां केवलं धार्मिकं साहित्यम् वर्तते |
भाषिक कार्यम्-
प्र.1 सूक्तयः अभ्युदयाय प्रेरयन्ति। इत्यत्र कर्तृपदं गद्यांशे चित्वा लिखत –
(अ) प्रेरयन्ति (ब) अभ्युदयाय (स) सूक्तयः (द) न कोऽपि
उत्तरम् – सूक्तयः
प्र.2 . संस्कृतभाषा सम्यक् शिक्षयति। इत्यत्र क्रियापदं लिखत |
(अ) शिक्षयति (ब) संस्कृतभाषा (स) सम्यक् (द) न कोऽपि
उत्तरम् – शिक्षयति
प्र.3. वदन्ति शब्दस्य समानार्थकपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत -
(अ) प्रेरयन्ति (ब) कथयन्ति (स) शिक्षयति (द) न कोऽपि
उत्तरम् – कथयन्ति
प्र.4. ' अरिः' शब्दस्य विलोमपदं गद्यांशात् चित्वा लिखत -
(अ) अमृतं (ब) सरसं (स) सरलं (द) मित्रम्

उत्तरम् – मित्रम्

<u>अतिरिक्त प्रश्नोत्तराणि:-</u>

प्रश्न निर्माणं :-

I.निर्देशा:- रेखांकित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत –

(1) संस्कृतं प्राचीनतमा <u>भाषा</u> |

(अ) कः (ब) का (स) केषाम् (द) केन

उत्तरम् : (ब) का

(2) <u>संस्कृतं</u> संगणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा |

(अ) कः (ब) केन (स) किम् (द) कस्य

उत्तरम् : (स) किम्

(3) **<u>आर्यभट्ट:</u>** शून्यस्य प्रतिपादनम् अकरोत् |

(अ) कः (ब) कुत्र (स) कस्य (द) किम्

उत्तरम् : (अ) कः

II. निर्देशा:- मञ्जूषातः समानार्थकपदानि चित्वा लिखत

मञ्जूषा-साहित्यं, परिवार: ,कोष:, कथितम् , वाणी, विश्वे,

निधि: ----------

वचः ----------

वाङ्मयं ----------

जगति ----------

कुटुम्बकम् ----------

उक्तम् ----------

उत्तराणि:- निधि: कोषः

वचः वाणी

वाङ्मयं साहित्यं

जगति विश्वे

कुटुम्बकम् परिवार:

उक्तम् कथितम्

III. निर्देशा:- अधोलिखितानां पदानां सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत -

(अ) भाषेयं (ब) सर्वोत्तमा (स) वसुधा + एव (द) केन+ अपि

उत्तरम् - (अ) भाषा + इयं (ब) सर्व + उत्तमा (स) वसुधैव (द) केनापि

IV. निर्देशा:- अधोलिखितानां शब्दरूपाणि निर्दिष्टविभक्तेः अनुसारं लिखत –

(क) मति द्वितीया विभक्तिः

(ख) प्रकृति तृतीया विभक्तिः

उत्तरम् -

विभक्ति:	एकवचनं	द्विवचनम्	बहुचनम्
द्वितीया विभक्तिः	मतिम्	मती	मती:
तृतीया विभक्तिः प्रकृत्यै		प्रकृतिभ्याम्	प्रकृतिभि:

V. निर्देशा:- उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्', अनुपयुक्त कथनानां समक्षम् 'न' इति लिखत –

(अ) कौटिल्यरचितम् ज्योतिषशास्त्रं जगति प्रसिद्धमस्ति।

(ब) गणितशास्त्रे शून्यस्य प्रतिपादनं सर्वप्रथमम् आर्यभट: अकरोत्।

उत्तराणि:- (अ) न

(ब) आम्

चतुर्दशः पाठः

अनारिकायाः जिज्ञासा (अनारिका की जिज्ञासा)

ऋकारान्तपुँल्लिङ्गः

पाठसारः

प्रस्तुत पाठ की कथा के द्वारा बच्चों के मन में उठने वाले भावों एवं विचारों का वर्णन किया गया है। इस पाठ में अप्रत्यक्ष रूप में अनारिका के माध्यम से कहा गया है कि पुल का उद्घाटन उसके निर्माणकर्ता द्वारा होना चाहिए। पाठ से 'ऋकारान्त' शब्द रूपों का ज्ञान प्राप्त होता है।

पुल के उद्घाटन के लिए मन्त्री जी आ रहे हैं। अनारिका ने पूछा कि क्या मन्त्री ने पुल का निर्माण किया है ? उसके पिता ने बताया कि पुल का निर्माण मजदूर करते हैं। उसके पिता ने आगे बताया कि प्रजा सरकार को धन देती है। उस धन से पत्थर इत्यादि सामग्री खरीदी जाती है। इससे पुल का निर्माण होता है। इस प्रकार उसके पिता ने अनारिका की जिज्ञासा को शान्त किया।

अनारिकायाः जिज्ञासा (शब्दार्थ एवं हिंदी अनुवाद)

(क) बालिकायाः अनारिकायाः मनसि सर्वदा महती जिज्ञासा भवति। अतः सा बहून् प्रश्नान् पृच्छति। तस्याः प्रश्नैः सर्वेषां बुद्धिः चक्रवत् भ्रमति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

मनसि-मन में (in the mind), सर्वदा-हमेशा (always), जिज्ञासा-कुतूहल (curiosity), पृच्छति-पूछती है (asks), सर्वेषां-सबकी (everyone's), चक्रवत् पहिए के समान (like a wheel), भ्रमति-घूमती है (spins).

सरलार्थ :

बालिका अनारिका के मन में हमेशा बड़ा कुतूहल (जानने की इच्छा) होता है। इसलिए वह बहुत प्रश्न पूछती है। उसके प्रश्नों से सबकी बुद्धि पहिए के समान घूमने लगती है।

(ख) प्रातः उत्थाय सा अन्वभवत् यत् तस्याः मनः प्रसन्नं नास्ति। मनोविनोदाय सा भ्रमितुं गृहात् बहिः अगच्छत्। भ्रमणकाले सा अपश्यत् यत् मार्गाः सुसज्जिताः सन्ति। सा चिन्तयति- किमर्थम् इयं सज्जा? सा अस्मरत् यत् अद्य तु मन्त्री आगमिष्यति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
अन्वभवत्-अनुभव किया (felt), मनोविनोदाय-मन को प्रसन्न करने के लिए (to make her mind happy), भ्रमितुं-घूमने के लिए (to stroll), भ्रमणकाले-घूमने के समय (at the time of strolling), सुसज्जिताः-सजे हुए (decorated), अस्मरत्-याद किया (remembered), मन्त्री-मन्त्री (minister).

सरलार्थ : सुबह उठकर उसने अनुभव किया कि उसका मन प्रसन्न (खुश) नहीं है। मन प्रसन्न करने के लिए वह घूमने के लिए घर से बाहर गई। घूमने के समय उसने देखा कि रास्ते सजे हुए हैं। वह सोचती है-किस लिए यह तैयारी है? उसे याद आया कि आज तो मन्त्री आएँगे।

(ग) सः अत्र किमर्थम् आगमिष्यति इति विषये तस्याः जिज्ञासाः प्रारब्धाः। गृहम् आगत्य सा पितरम् अपृच्छत्-"पितः! मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्-"पुत्रि! नद्याः उपरि किं मन्त्री सेतोः निर्माणम् अकरोत्?"

शब्दार्थाः (Word Meanings):
जिज्ञासा-कुतूहल(जानने की इच्छा) (curiosity), प्रारब्धाः -आरम्भ हुईं (begun/aroused), आगत्य-आकर (having come), किमर्थम्-किस लिए (What for), निर्मितः - निर्माण किया गया (constructed), उपरि-ऊपर (over), सेतुः-पुल (bridge), उद्घाटनार्थ-उद्घाटन के लिए (for inauguration).

सरलार्थ :
वे यहाँ किसलिए आएँगे इस विषय में उसका कुतूहल आरम्भ हुआ। घर आकर उसने पिता से पूछा-"पिता जी! मन्त्री किसलिए आ रहे हैं।" पिता जी बोले-"पुत्री! नदी के ऊपर नया पुल बना है, उसके उद्घाटन के लिए मन्त्री आ रहे हैं।" अनारिका ने फिर पूछा-"पिता जी! क्या मन्त्री ने पुल का निर्माण किया है?"

(घ) पिता अकथयत्-"न हि पुत्रि! सेतोः निर्माणं कर्मकराः अकुर्वन्!" पुनः अनारिकायाः प्रश्न: आसीत्-"यदि कर्मकराः सेतोः निर्माणम् अकुर्वन्, तदा मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्-"यतो हि सः अस्माकं देशस्य मन्त्री।" "पितः! सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतः आयान्ति? किं तानि मन्त्री ददाति?"

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
कर्मकराः-मजदूर (labourers), यतोहि-क्योंकि (because), अस्माकं-हमारा (our), सेतोः-पुल का (of the bridge), निर्माणाय-बनाने के लिए (for construction), प्रस्तराणि (ब०व०)-पत्थर (stones), आयान्ति-आते हैं (are coming), ददाति-देता है/देते हैं (is giving).

सरलार्थ :
पिता ने कहा- “नहीं पुत्री! पुल का निर्माण मजदूरों ने किया था।” फिर अनारिका का प्रश्न था “यदि मजदूरों ने पुल बनाया है, तब मन्त्री किसलिए आ रहे हैं?” पिता बोले-“क्योंकि, वे हमारे देश के मन्त्री हैं।” “पिता जी! पुल को बनाने के लिए पत्थर कहाँ से आते हैं ? क्या उन्हें मन्त्री देते हैं ?”

(ङ) विरक्तभावेन पिता उदतरत्-“अनारिके! प्रस्तराणि जनाः पर्वतेभ्यः आनयन्ति।”पितः! तर्हि किम्, एतदर्थं मन्त्री धनं ददाति? तस्य पार्श्वे धनानि कुतः आगच्छन्ति?” एतान् प्रश्नान् श्रुत्वा पिताऽवदत्-“अरे! प्रजाः सर्वकाराय धनं प्रयच्छन्ति।” विस्मिता अनारिका पुनः अपृच्छत् “पितः! कर्मकराः पर्वतेभ्यः प्रस्तराणि आनयन्ति। ते एव सेतुं निर्मान्ति। प्रजाः सर्वकाराय – धनं ददति। तथापि सेतोः उद्घाटनार्थं मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?”

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
उदतरत्-उत्तर दिया (replied), प्रस्तराणि-पत्थर (stones) पर्वतेभ्यः -पहाड़ों से (from the mountains), आनयन्ति-लाते हैं (bringing), सर्वकाराय सरकार के लिए (for government), तर्हि-तो (then), किमर्थम् (किम् + अर्थम्)—किसलिए, क्यों (why).

सरलार्थ :
पिता ने उदासीन भाव से उत्तर दिया, “अनारिका! पत्थर लोग पहाड़ों से लाते हैं।” “पिता जी! तो क्या! इसके लिए मन्त्री धन देते हैं ? उनके पास धन कहाँ से आता है?” इन प्रश्नों को सुनकर पिता बोले -“अरे! प्रजा सरकार को धन देती हैं।” आश्चर्यचकित अनारिका ने फिर पूछा- “पिता जी! मज़दूर पहाड़ों से पत्थर लाते हैं, वे ही पुल बनाते हैं, प्रजा सरकार को धन देती हैं, तो भी मन्त्री पुल के उद्घाटन के लिए किसलिए (क्यों) आ रहे हैं?”

(च) पिता अवदत्-“प्रथममेव अहम् अकथयम् यत् सः देशस्य मन्त्री अस्ति।स जनप्रतिनिधिः अपि अस्ति। जनतायाः धनेन निर्मितस्य सेतोः उद्घाटनाय जनप्रतिनिधिः आमन्त्रितो भवति। चल, सुसज्जिता भूत्वा विद्यालयं चल।” अनारिकायाः मनसि इतोऽपि बहवः प्रश्नाः सन्ति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
प्रथममेव (प्रथमम् + एव)-पहले ही (already /in the beginning), बहवः-बहुत से (so many), इतोऽपि-इससे भी (even more) निर्मितस्य-बने हुए (already made) सेतोः-पुल का (bridge)

सरलार्थ :
पिता बोले, “पहले ही मैंने कहा था कि वे देश के मन्त्री हैं। जनप्रतिनिधि भी हैं। जनता के धन से बने हुए पुल के

उद्घाटन के लिए जनता के प्रतिनिधि निमन्त्रित किए जाते हैं। चलो, तैयार होकर विद्यालय जाओ।" अब भी अनारिका के मन में बहुत से प्रश्न हैं।

पठित गद्यान्शः

1. अधोलिखितं गद्यान्शं पठित्वा प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

बालिकायाः अनारिकायाः मनसि सर्वदा महती जिज्ञासा भवति। अतः सा बहून् प्रश्नान् पृच्छति। तस्याः प्रश्नैः सर्वेषां बुद्धिः चक्रवत् भ्रमति। प्रातः उत्थाय सा अन्वभवत् यत् तस्याः मनः प्रसन्नं नास्ति। मनोविनोदाय सा भ्रमितुं गृहात् बहिः अगच्छत्। भ्रमणकाले सा अपश्यत् यत् मार्गाः सुसज्जिताः सन्ति। सा चिन्तयति- किमर्थम् इयं सज्जा? सा अस्मरत् यत् अद्य तु मन्त्री आगमिष्यति। सः अत्र किमर्थम् आगमिष्यति इति विषये तस्याः जिज्ञासाः प्रारब्धाः। गृहम् आगत्य सा पितरम् अपृच्छत्-"पितः! मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्-"पुत्रि! नद्याः उपरि किं मन्त्री सेतोः निर्माणम् अकरोत्?"

क. एकपदेन उत्तरत-
I. सा भ्रमणकाले का अपश्यत् ?
II. के सुसज्जिताः सन्ति ?
ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत-
I. का मनोविनोदाय गृहाद् बहिः अगच्छत् ?
II. नद्याः उपरि सेतोः निर्माणं कः अकरोत् ?
ग. निर्देशानुसारं उत्तरत-
I. **"सः अत्र किमर्थं आगच्छति"** अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम् ?
अत्र / सः / किमर्थम् / आगच्छति
II. **आगत्य** –इति शब्दे प्रत्ययः वर्तते –
क्त्वा / तुमुन् / ल्यप् / त्य
III. **मतिः ' इति** शब्दस्य किं पर्यायवाचिपदम् अत्र गद्यान्शे प्रयुक्तम् ?
मतिः / गृहं / मनः / बुद्धिः
IV. **तस्याः प्रश्नैः सर्वेषां बुद्धिः चक्रवत् भ्रमति**- अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम् ?
सर्वेषां / चक्रवत् / भ्रमति / बुद्धिः

उत्तरम् –
क. एकपदेन उत्तरत-
I. अनारिका
II. मार्गाः
ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत-
I. अनारिका मनोविनोदाय गृहाद् बहिः अगच्छत् |
II. नद्याः उपरि सेतोः निर्माणं मन्त्री अकरोत् |

ग. निर्देशानुसारं उत्तरत-

I. सः

II. ल्यप्

III. बुद्धिः

IVभ्रमति

1. अधोलिखितं गद्यान्शं पठित्वा प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

पिता अकथयत्-"न हि पुत्रि! सेतोः निर्माणं कर्मकराः अकुर्वन्!" पुनः अनारिकायाः प्रश्न: आसीत्-"यदि कर्मकराः सेतोः निर्माणम् अकुर्वन्, तदा मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?" पिता अवदत्-"यतो हि सः अस्माकं देशस्य मन्त्री।" "पितः! सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतः आयान्ति? किं तानि मन्त्री ददाति?" विरक्तभावेन पिता उदतरत्- "अनारिके! प्रस्तराणि जनाः पर्वतेभ्यः आनयन्ति।"पितः! तर्हि किम्, एतदर्थं मन्त्री धनं ददाति? तस्य पार्वे धनानि कुतः आगच्छन्ति?" एतान् प्रश्नान् श्रुत्वा पिताऽवदत्-"अरे! प्रजाः सर्वकाराय धनं प्रयच्छन्ति।" विस्मिता अनारिका पुनः अपृच्छत् "पितः! कर्मकराः पर्वतेभ्यः प्रस्तराणि आनयन्ति। ते एव सेतुं निर्मान्ति। प्रजाः सर्वकाराय – धनं ददति। तथापि सेतोः उद्घाटनार्थं मन्त्री किमर्थम् आगच्छति?"

क. एकपदेन उत्तरत-

I. कर्मकराः पर्वतेभ्यः कानि आनयन्ति?

II. प्रजाः सर्वकाराय किं ददति?

ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

I. विरक्तभावेन पिता किमुदत्तरत्?

II. "पितः! सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतःआयान्ति –इति का वदति ?

ग. निर्देशानुसारं उत्तरत-

I. "विरक्तभावेन" अस्मिन् शब्दे का विभक्तिः ?

प्रथमा / सप्तमी / तृतीया / द्वितीया

II.एतदर्थं ' इत्यस्य संधिविच्छेदं वर्तते –

एतद्+ अर्थम् / एत+ अर्थम् / एतत्+ अर्थम् / एत+ दर्थम्

III. **ददाति –** इति क्रियापदं कस्मिन् लकारे अस्ति ?

लट् / लृट् / लङ् / लोट्

IV. -“अरे! प्रजाः सर्वकाराय धनं प्रयच्छन्ति।” - अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम् ?

सर्वकाराय / प्रयच्छन्ति / प्रजाः / धनं

उत्तराणि -क. एकपदेन उत्तरत-

I. प्रस्तराणि

II. धनम्

ख. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

I. विरक्तभावेन पिता उदतरत्-“अनारिके! प्रस्तराणि जनाः पर्वतेभ्यः आनयन्ति।

II. “पितः! सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतःआयान्ति –इति अनारिका वदति |

ग. निर्देशानुसारं उत्तरत-

I. तृतीया

II. एतत्+ अर्थम्

III. **लट्**

IV. प्रयच्छन्ति

उचितविभक्तिपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत-

क. पुत्र .....सह गच्छति | (पितरं/पित्रा)

ख. बालकः .....पश्यति | (मातुः/ मातरं)

ग. भो .....! मह्यं दुग्धं देहि | (माता/ मातः)

घ. ..... शिशोः पोषणाय भवति | (मातरं / मातुः)

ङ सर्वाः .....स्नेहपूर्णाः भवन्ति |(मातरः / मात्रा)

उत्तरं-क. पित्रा, ख. मातरम्, ग. मातः,घ. मातुः, ङ मातरः

प्रश्न – 2 – समानार्थकानि पदानि मेलयत-

क.	ख.
प्रस्तरं	सरितः
मनसि	अनेके
नद्याः	नेता
बहवः	चेतसि
मन्त्री	पाषाणः

उत्तराणि --क. ख.

प्रस्तरं	पाषाणः
मनसि	चेतसि
नद्याः	सरितः
बहवः	अनेके
मन्त्री	नेता

प्रश्न- 3- स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

क. मनोविनोदाय सा **गृहाद्** बहिः अगच्छत् |

ख. **प्रस्तराणि** पर्वतेभ्यः आनयन्ति |

ग. नद्याः उपरि **नवीनः** सेतुः निर्मितः |

घ. प्रजाः **धनं** ददाति |

ङ. अनारिका **प्रश्नान्** पृच्छति |

उत्तरं- क. कस्मात् ख. कानि ग. कीदृशः घ. किम् ङ . कान्

प्रश्न-4- वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत-

क. सा अस्मरत् यत् अद्य तु मन्त्री आगच्छति |

ख. कर्मकराः सेतोः निर्माणं अकुर्वन् |

ग. सेतोः उद्घाटनाय जनप्रतिनिधिः आमन्त्रितः भवति |

घ. अनारिकायाः मनसि महति जिज्ञासा भवति |

ङ. सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतः आयान्ति ?

च. चल सुसज्जिता भूत्वा विद्यालयं चल |

उत्तरं - घ. अनारिकायाः मनसि महती जिज्ञासा भवति |

क. सा अस्मरत् यत् अद्य तु मन्त्री आगच्छति |

ख. कर्मकराः सेतोः निर्माणं अकुर्वन् |

ङ. सेतोः निर्माणाय प्रस्तराणि कुतः आयान्ति ?

ग. सेतोः उद्घाटनाय जनप्रतिनिधिः आमन्त्रितः भवति |

च. चल सुसज्जिता भूत्वा विद्यालयं चल |

प्रश्न-5- पदानि आधृत्य वाक्यानि रचयत-

मन्त्री=.....

विद्यालयः =.....

सेतुः=.....

कर्मकराः =.....

धनम्=.....

उत्तरं- व्याकरणदृष्ट्या शुद्धवाक्यानि लेखनीयानि |

---------- इति --------

पञ्चदशः पाठः (लालनगीतम्)

प्रथम सोपान: -श्लोकानां हिन्दी

उदिते सूर्ये धरणी विहसति |
पक्षी कूजति कमलं विकसति ||1||
अर्थ:- सूर्य के उदय होने पर पृथ्वी हर्षित होती है,पक्षी चहचहाता है ,कमल खिल जाता है|
नदति मन्दिरे उच्चैर्ढक्का |
सरित: सलिले सेलति नौका ||2||
अर्थ:-मन्दिर में ज़ोर-ज़ोर से नगाड़ों की आवाज़ होती है , नदी के जल में नाव तैरती है |
पुष्पे पुष्पे नानारङ्गा:|
तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गा: ||3||
अर्थ:- (उपवन)में प्रत्येक फूल में भिन्न – भिन्न रंग हैं ,उन पर तितलियाँ मंडराती हैं |
वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम् |
विविधैर्वर्णै र्विभाति चित्रम्||4||
अर्थ:-प्रत्येक वृक्ष पर पत्ते नए प्रतीत होते हैं ,अनेक रंगों से चित्र सुशोभित होता है |
धेनु: प्रातर्यच्छति दुग्धम्|
शुद्धं स्वच्छं मधुरं स्निग्धम्||5||
अर्थ:- प्रात: गाय शुद्ध स्वच्छ मधुर स्निग्ध(चिकना)दूध देती है,(जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है) |
गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति |
उच्चैस्तत्र च सिंह: नर्दति ||6||
अर्थ:-घने जंगल में बाघ गर्जना करता है ,वहीँ पर (जंगल में) सिंह जोर से दहाड़ता है |
हरिणोऽयं खादति नवघासम् |
सर्वत्र च पश्यति सविलासम् ||7||
अर्थ:-यह हिरण नई घास (नए अंकुर)खाता है,और खाते हुए सभी ओर विलासपूर्वक देखता है |
उष्ट्र: तुङ्ग: मन्दं गच्छति |

पृष्ठे प्रचुरं भारं निवहति ||8||
अर्थ:-ऊँचा सा ऊँट धीरे धीरे चलता है ,और अपनी पीठ पर काफी (बहुत) भार उठाता है |
घोटकराज: क्षिप्रं धावति |
धावनसमये किमपि न खादति ||9||
अर्थ:-घोड़ा तेजी से दौड़ता है , दौड़ते समय कुछ भी नहीं खाता है |
पश्यत भल्लुकमिमं करालम् |
नृत्यति थथथै कुरु करतालम् ||10||
अर्थ:-इस डरावने भालू को देखो , थथथै करता हुआ नाचता है ,तुम ताली बजाओ |

द्वितीय: सोपानः- प्रश्नोत्तराणि

प्रश्न:-1.उदिते सूर्ये का विकसति ?

उत्तरम्- उदिते सूर्ये धरणी विहसति|

प्रश्न:-2. कस्मिन् उदिते धरणी विहसति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते धरणी विहसति|

प्रश्न:- 3.सूर्ये उदिते धरणी किं करोति?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते धरणी विहसति|

प्रश्न:-4. सूर्ये उदिते क: कूजति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते पक्षी कूजति|

प्रश्न:-5. सूर्ये उदिते पक्षी किं करोति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते पक्षी कूजति

प्रश्न:-6. सूर्ये उदिते कमलं किं करोति?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते कमलं विकसति|

प्रश्न:-7.सूर्ये उदिते कुत्र ढक्का उच्चैर्नदति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते मन्दिरे ढक्का उच्चैर्नदति|

प्रश्न:-8. सूर्ये उदिते मन्दिरे ढक्का कथं नदति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते मन्दिरे ढक्का उच्चैर्नदति |

प्रश्न:9.-सूर्ये उदिते मन्दिरे का कथं नदति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते मन्दिरे ढक्का उच्चैर्नदति |

प्रश्न:-10.सूर्ये उदिते कस्याः सलिले नौका सेलति ?

उत्तरम्-सूर्ये उदिते सरित: सलिले नौका सेलति |

प्रश्न:-11.सूर्ये उदिते सरित: कुत्र नौका सेलति ?

उत्तरम्- सूर्ये उदिते सरित: सलिले नौका सेलति|

प्रश्न:-12. सूर्ये उदिते सरित: सलिले का सेलति ?

उत्तरम्-सूर्ये उदिते सरित: सलिले नौका सेलति |

प्रश्न:-13. पुष्पेषु का: डयन्ते ?

उत्तरम्- पुष्पेषु चित्रपतंगा: डयन्ते |

प्रश्न:- 14.कीदृशानि पुष्पाणि सन्ति ?

उत्तरम्- अनेकवर्णानि पुष्पाणि सन्ति |

प्रश्न:-15. अनेकवर्णानि कानि सन्ति ?

उत्तरम्- अनेकवर्णानि पुष्पाणि सन्ति|

प्रश्न:- 16.वृक्षेषु कीदृशानि पत्राणि सन्ति ?

उत्तरम्-वृक्षेषु नूतनानि पत्राणि सन्ति |

प्रश्न:-17. नूतनानि कुत्र पत्राणि सन्ति?

उत्तरम्-नूतनानि पत्राणि वृक्षेषु सन्ति|

प्रश्न:-18. विविधै: वर्णै: किं विभाति ?

उत्तरम्-विविधै: वर्णै: चित्रं विभाति |

प्रश्न:- 19. चित्रं कै: विभाति ?

उत्तरम्-चित्रं विविधै: वर्णै: विभाति |

प्रश्न:- 20. का प्रात: दुग्धं यच्छति ?

उत्तरम्-प्रात: धेनु: दुग्धं यच्छति |

प्रश्न:-21. धेनु: कदा दुग्धं यच्छति?

उत्तरम्- प्रात: धेनु: दुग्धं यच्छति |

प्रश्न:-22. प्रात: धेनु: किं यच्छति?

उत्तरम्- प्रात: धेनु: दुग्धं यच्छति|

प्रश्न:- 23.व्याघ्र: कुत्र गर्जति ?

उत्तरम्-व्याघ्र: विपिने गर्जति|

प्रश्न:- 24.व्याघ्र: कीदृशे विपिने गर्जति?

उत्तरम्-व्याघ्र: गहने विपिने गर्जति|

प्रश्न:-25. सिंह: कुत्र नर्दति ?

उत्तरम्-सिंह: गहने विपिने नर्दति |

प्रश्न:-26. सिंह: कथं नर्दति ?

उत्तरम्-सिंह: विपिने उच्चै: नर्दति|

प्रश्न:27.- हरिण: किं खादति?

उत्तरम्-हरिण: नवघासं खादति |

प्रश्न:- 28.अयं क: नवघासं खादति ?

उत्तरम्-अयं हरिण: नवघासं खादति |

प्रश्न:-29. हरिण: सर्वत्र कथं पश्यति ?

उत्तरम्-हरिण: सर्वत्र सविलासं पश्यति |

प्रश्न:- 30.हरिण: कुत्र कथं पश्यति ?

उत्तरम्-हरिण: सर्वत्र सविलासं पश्यति |

प्रश्न:- 31.क: सर्वत्र सविलासं पश्यति ?

उत्तरम्-हरिण: सर्वत्र सविलासं पश्यति |

प्रश्न:-32. हरिण: सर्वत्र सविलासं किं करोति ?

उत्तरम्-हरिण: सर्वत्र सविलासं पश्यति |

प्रश्न:- 33.क: क्षिप्रं (शीघ्रम्) धावति?

उत्तरम्-घोटकराज: क्षिप्रं (शीघ्रम्) धावति |

प्रश्न:-34. घोटकराज: कथं धावति?

उत्तरम्-घोटकराज: क्षिप्रं (शीघ्रम्) धावति |

प्रश्न:- 35.अश्व: कदा न खादति ?

उत्तरम्-अश्व: धावनसमये न खादति|

प्रश्न:- 36.इमं करालं कं पश्यत ?

उत्तरम्-इमं करालं भल्लुकं पश्यत |

प्रश्न:- 37.इमं कीदृशं भल्लुकं पश्यत ?

उत्तरम्-इमं करालं भल्लुकं पश्यत |

प्रश्न:-38. भल्लुक: कथं नृत्यति ?

उत्तरम्- भल्लुक: थथथै: नृत्यति |

प्रश्न:- 39.बाला: किं कुर्वन्तु ?

उत्तरम्-बाला: करतालं कुर्वन्तु|

प्रश्न:- 40.यदा भल्लुक: नृत्यति तदा बाला: किं कुर्वन्ति?

उत्तरम् - यदा भल्लुक: नृत्यति तदा बाला: करतालं कुर्वन्ति |

तृतीय: सोपान:- भाषिक कार्यम्

प्रश्न:-1. "पश्यत भल्लुकमिमं करालम्" अत्र भयंकरम् कस्य शब्दस्य अर्थ: अस्ति ?

(1) भल्लुक:(2) पश्यत (3) करालम्

(2) उत्तरं - करालम्

प्रश्न:-2. "घोटकराज: क्षिप्रं धावति" अत्र किमस्ति अव्यय पदम् ?

(1) क्षिप्रम् (2) पश्यत(3) घोटकराज: (4) धावति

उत्तरं - क्षिप्रम्

प्रश्न:-3. "गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति" अत्र वने कस्य शब्दस्य अर्थ: अस्ति?

(1) गहने (2) विपिने(3) गर्जति(4) व्याघ्र:

उत्तरं - विपिने

प्रश्न:-4. 'सरित:' अस्मिन् पदे का विभक्ति: अस्ति ?

(1) प्रथमा (2) सप्तमी (3) षष्ठी

उत्तरं - षष्ठी

प्रश्न:-5. "तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गा:" अत्र उत्पतन्ति कस्य शब्दस्य अर्थ: अस्ति?

(1) चित्रपतङ्गा:(2) तेषु (3) डयन्ते

उत्तरं - डयन्ते

प्रश्न:-6. घोटकराज: अस्य शब्दस्य पर्याय: क: अस्ति?

(1) गज: (2)उष्ट्र: (3) अश्व: (4) भुजंग:

उत्तरं - अश्व:

प्रश्न:-7.उच्चै: इति पदस्य विलोम पदम् किमस्ति ?

(1) मन्दम् (2) नीचै: (3) प्रात:

उत्तरं - नीचै:

प्रश्न:-8. 'प्रात:' इति पदस्य विलोम पदम् किमस्ति ?

(1)मध्याह्न: (2) रात्रि: (3) सायम्

उत्तरं – सायम्

प्रश्न:-9. "तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गा:" अत्र क्रियापदं किम् अस्ति?

(1)चित्रपतङ्गा:(2) तेषु (3) डयन्ते

उत्तरं – डयन्ते

प्रश्न:-10. सरित: सलिले सेलति नौका अस्यां पंक्तौ कर्तृपदं किमस्ति ?

(1).सरित: (2) सलिले (3) सेलति: (4) नौका

उत्तरं – नौका

चतुर्थ: सोपान:-शब्दार्था:

धरणी –पृथ्वी

विहसति – (वि+हसति)हंसती है
पक्षी –पक्षा: यस्य सन्ति स: (पक्षधर:)
सरित:- नद्या:
विभाति –विशेष रूपेण भाति (रोचते)
तुङ्ग: - उच्च:
करालम् –भयंकरम्

पञ्चम:सोपान:- पाठस्य उपयोगिता

पाठ्यपुस्तके पाठोपस्थापनस्य मुख्यमुद्देश्यं प्रत्यूषकाले छात्रा: निद्रात्यागं कुर्युः|
छात्रा: सूर्योदयं पश्येयु:|
छात्रा: खगानां कलरवं शृणुयु: |
मन्दिरं गत्वा घंटानादं कुर्यु:|
प्रात: भ्रमणं उद्याने कर्तव्यम्|
एष: काल: अध्ययनाय अपि अतीव लाभकरी भवति|

------- इति ---------